अनुक्रमणिका

सामुदायिक गतिविधियों, स्थानीय ज्ञान तथा संरक्षण को बढ़ावा : फ़िलीपींस का एक सर्वेक्षण[१] 2

नारियल छीलने की जयसीलन विधि 5

जंगल की रक्षा का जिम्मा : सामुदायिक संरक्षण का नमूना 7

तेरहवीं शोधयात्रा : समय के ज्वार-भाटे की साक्षी 9

समाचार-विचार 12

ज्ञान 19

हनी बी की गुनगुनाहट

तमिल 13

उत्तरांचल 14

उड़िया 15

गुजराती 16

कन्नड़ 17

पुस्तक समीक्षा 18

संवाद 20

संपादक
अनिल कुमार गुप्ता
सहायक संपादक व भाषांतर
परीमिता पी. लोढ़ा, साधना गुप्ता
संपादकीय विभाग
रिया सिन्हा, विजय शेरी चंद, टी. एन. प्रकाश, विवेकानन्दन, सुधीरेन्द्र शर्मा, रमेश पटेल, विपिन कुमार, परवीन अनसारी, संदीप शर्मा, दीपक आचार्य, अंशु श्रीवास्तव, योगेश श्रीवास्तव, हेमा पटेल
रूपांकन
उन्नी क्रिश्नन, दक्षा मकवाणा, सुमित्रा पटेल, शैलेन्द्र गोरैया, पलाश ग्राफिक्स, बाला मुदलियार, निशा बिनोय
संपादकीय पता
हनी बी, कृते प्रोफेसर अनिल कुमार गुप्ता,
भारतीय प्रबंध संस्थान, वस्त्रापुर, अहमदाबाद-१५
दूरभाष - ९१-७९-२६३२४९२७ फैक्स - ९१-७९-२६३०७३४१,
ईमेल - honeybee@sristi.org
वेबसाइट - http://www.sristi.org

जो सोचो सो पाओ

एक बार थोर (गरजन के देवता) तथा लोकी (धोखेबाजी के देवता) असगार्ड छोड़कर दैत्यों के राजा उत्गर्थ लोकी के क्षेत्र में चले गए। इन दोनों देवों के साथ थयाल्फ़ी तथा रोसकावा नाम के दो बच्चे भी थे। ये सभी राजा के महल के द्वार पर पहुंचकर उन्होंने देखा कि द्वार बहुत ही विशालकाय था। थोर ने महल का द्वार खोलने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी, परन्तु सब व्यर्थ गया। आखिरकार उन्होंने द्वार के बीच के सरियों से निकलकर महल में प्रवेश किया।

अन्दर पहुंचने पर राजा ने कहा कि केवल उन्हीं लोगों को महल में प्रवेश करने की इजाजत है जो किसी न किसी कला में माहिर हैं। राजा ने उन्हें भी अपनी कला प्रदर्शन के लिए कहा। थोर और लोकी ने कहा कि थयाल्फ़ी पूरी दुनिया में सबसे तेज दौड़ता है। उत्गर्थ लोकी ने कहा कि थयाल्फ़ी को उसके राज्य के किसी लड़के के साथ प्रतियोगिता करनी होगी। राजा ने हुगी नाम के लड़के को थयाल्फ़ी के साथ दौडने के लिए बुलाया।

दौड शुरु हुई, थोर और लोकी बड़ी अनिच्छा से उन्हें भागते हुए देख रहे थे। वे जानते थे कि जीत थयाल्फ़ी की ही होगी। दोनों देवों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उन्हें पता चला कि थयाल्फ़ी हार गया है। उन्होंने राजा से एक बार फ़िर दौड़ करवाने के लिए कहा। फ़िर भी वही परिणाम रहा, थयाल्फ़ी हार गया। देवों को अपनी आंखो पर विश्वास नहीं हुआ। राजा ने हुगी से एक बार फ़िर भागने को कहा। थयाल्फ़ी ने अपनी आंखे बन्द करके पूरा ध्यान दौड पर केन्द्रित किया, जबकि हुगी मुस्कुराता खड़ा रहा। फ़िर से दौड़ हुई पर परिणाम में कोई अन्तर नही आया।

थोर और लोकी को समझ नहीं आया कि ऐसा कैसे हुआ?

पाठक मित्रों, क्या आप बता सकते हैं कि थयाल्फ़ी क्यों हार गया?

उत्तर जानने के लिए देखें पेज- २१

स्रोत :- नोर्स माइथोलॉजी (http://groups.msn.com/AGFlibrary)

हनी बी नेटवर्क

हित्तलगिडा (कन्नड़)
डॉ. टी. एन. प्रकाश
कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि विश्वविद्यालय
जी.के.वी.के, बैंगलोर -६५,कर्नाटक
email:hittalu@bgi.vsnl.net.in
prakashtnk@yahoo.com

आम अखा-पखा (उड़िया)
डॉ. बलराम साहू
३-आर, बीपी ५/२, बीपी कोलोनी युनिट-८
भुवनेश्वर - ७५१०१२ उड़ीसा
balaram_sahu@hotmail.com

नमवाली वेलेन्माई (तमिल)
पी. विवेकानन्दन
४५, टी.पी.एम.नगर,
विरट्टिपट्टू - ६२५०१० तमिलनाडु
numvali@vsnl.com

लोकसरवाणी (गुजराती)
रमेश पटेल, सृष्टि
पो.बो.नं.१५०५०, आंबावाड़ी,
अहमदाबाद - ३८० ०१५
loksarvani@sristi.org

हनी बी (अंग्रेजी)
प्रो. अनिल कु. गुप्ता
भारतीय प्रबंध संस्थान, वस्त्रापुर,
अहमदाबाद- १५
honeybee@sristi.org

इनि कर्षकन संसारिकटे (मलयालम)
टी. जे. जेम्स
पीयरमेड डेवलपमेन्ट सोसायटी
पीयरमेड, इडुक्की- ६८५५३१, केरल
pedes@md2.vsnl.net.in

प्रकाशन और मुद्रण- सृष्टि इन्नोवेशन्स की ओर से रिया सिंन्हा, बी- ४ रवि निकेतन एपार्टमेन्ट, वस्त्रापुर, अहमदाबाद- ३८००१५ प्रकाशन स्थल- बंसीधर ऑफसेट, अहमदाबाद। संपादक : अनिल कुमार गुप्ता

सोच और समझ की गरीबी : क्या गरीब केवल 'मदद' के पात्र है, समाधानो के स्त्रोत नहीं?

सम्पादकीय

ऐसा लगता है कि देश के नीति-निर्माताओं को गरीब जनता के विकास का राग अलापने का नया शौक हुआ है परन्तु जैसा कि हमेशा से होता आया है इस बार भी हम ग्रामीण ज्ञान की अवहेलना करेंगे जो टिकाऊ और गौरवपूर्ण विकास का आधार बन सकता है।

कुछ वर्षो पहले, केन्द्र सरकार ने गरीबी उन्मूलन के लिए विभिन्न जिलों को सहायता राशि देने का निर्णय किया। भूमिहीनों की संख्या के आधार पर राज्यों को पैसा दिया जाना तय हुआ। जिस राज्य में सर्वाधिक भूमिहीन होंगे उन्हें सबसे पहले पैसा दिया जाएगा। तब ग्रामीण विकास से जुड़े योजना आयोग के एक सदस्य को मैने पत्र लिखा कि पैसा देने का उनका यह तरीका उन राज्यों के अहित में है जो वित्तीय रुप से निर्धन है। आशा के अनुरुप यह बात केवल बात बनकर रह गई। तत्कालीन योजना आयोग को यह समझ नहीं आया था कि विकसित क्षेत्रों में भूमिहीनों की संख्या सर्वाधिक होती है। इन राज्यों में मजदूरों की अधिक मांग होती है और जमीन महंगी होती है। ज़ाहिर है यहां मजदूरी भी अच्छी मिलती है। बाज़ार की मांग के चलते रोज़गार की भी समस्या नहीं होती, राज्य का भी कोई खास हस्तक्षेप नहीं होता। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न क्षेत्रों के लिए विकास की ट्रिकल-डाऊन अवधारणा समस्याओं के समाधान में मददगार हो सकती है। परन्तु जब संसाधन सीमित हों तब सरकार को प्रयास करना चाहिए कि जिसे मदद की सर्वाधिक ज़रुरत हो उसे सबसे पहले मदद मिले। पहाड़ी क्षेत्रों, बाढ ग्रस्त क्षेत्रों और आदिवासी तथा जनजातीय क्षेत्रों में मजदूरी बहुत निम्न है। इन स्थानों पर जमीन की कीमत भी बहुत कम है। काम की तलाश में यहां के पुरुष अधिकतर बाहर ही रहते हैं।

दुर्भाग्य से नीति-निर्माताओं को इस बात की खास चिन्ता नहीं है कि ये क्षेत्र जैवविविधता और अपनी परम्परा की दृष्टि से बेहद समृद्ध हैं। यहां महिलाएं घर की मालकिन होती है। इन क्षेत्रों में रोज़गार की संभावनाएं पैदा करने की बेहद आवश्यकता है। गौर करने की बात है कि यहां भूमिहीनों की संख्या बहुत कम है (क्योंकि एक तो भूमि का कोई महत्व नहीं है, दूसरा अधिकांश पुरुष काम के सिलसिले में बाहर रहते हैं) इसलिए इन क्षेत्रों को पैसा भी सबसे कम मिलता है। जिन योजनाओं के तहत इन क्षेत्रों को पैसा मिलता है वे योजनाएं यहां के अनुकूल नहीं होती।

इस कहानी का कोई अन्त नहीं है। हम उन राज्यों को क्या फ़िर चावल और गेहूं ही देंगे जिनका मुख्य खाद्य बाजरा और ज्वार है? क्या इस तरह हम स्थानीय खाद्य की मांग को कम नहीं कर रहे। चावल और गेहूं की आपूर्ति जब अधिक होगी तो निश्चित ही स्थानीय लोगों का खाद्य तो छूट ही जाएगा। गरीब जो धान उगा रहा है उसकी मांग ही नहीं होती या वह सस्तें में बिकेगा तो उसे क्या लाभ होगा? ये कैसा विकास है जिसमें स्थानीय संसाधनों, स्थानीय ज्ञान, स्थानीय हुनर और परम्पराओं की कोई जगह नहीं हैं? क्या गरीब सदैव गरीब ही बने रहेगें?

क्या गरीब समाधान का माध्यम नही बन सकते? क्या हम अपनी समस्याओं का समाधान अपने स्थानीय ज्ञान से नहीं पा सकते? क्या भारत में ज्ञान के बदले धान जैसा कोई कार्यक्रम नहीं हो सकता? क्यों हम स्थानीय ज्ञान को अमूल्य नहीं समझते? क्यों हम गरीब जनों को उनके ज्ञान और हुनर के बदले दो वक्त की रोटी नही देते। स्थानीय ज्ञान से नया उत्पाद बन सकता है, कुछ एक नवसृजनों से व्यापार की संभावनाएं खोजी जा सकती है। सूक्ष्म निवेश नवसृजन कोष भी इसके लिए मदद कर सकता है। हो सकता है कुछ स्थितियों में केवल पैसे से काम न चले, व्यवहारिक प्रयोग की ज़रुरत हो सकती है।

गरीबी उन्मूलन के लिए हो रहे विकास में गरीब सर्वाधिक अमीर होते हैं। ऐसा विकास स्थानीय ज्ञान, संसाधनों तथा हुनर (जिसकी बाज़ार में कोई कीमत नहीं होती) पर टिका होता है। स्थानीय खाद्य की मांग घटा कर हम किस विकास की तरफ जा रहे हैं (आंध्र प्रदेश में चावल मात्र दो रु. प्रति किलो मिला, परिणाम स्वरुप कभी सर्वाधिक खाया जाने वाला ज्वार अब सबसे कम खाया जाता है)? इस तरह तो लोग केवल ज़िन्दा रहेगें, लोगों का आत्मसम्मान - प्रकृति के साथ परस्पर निर्भरता सब समाप्त हो जाएगा। क्या कभी सोचा है इससे स्थानीय जैव- विविधता पर क्या प्रभाव पड़ेगा? स्थानीय जन जो धान उगाते हैं हम वह क्यों नही खरीद सकते? स्थानीय फ़सले जो पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं हम क्यों नही खाते? क्यों यह जन-वितरण व्यवस्था का हिस्सा नहीं बन पाता? हम स्थानीय ज्ञान, स्थानीय जीवन, स्थानीय खान-पान की आधार-भूमि पर ही टिके हुए है। हम चाहें तो इनके अनौपचारिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ सकते हैं। इन लोगों को बाज़ार का सहयोग, बाज़ार में स्थान देकर स्थानीय उत्पाद की गुणवत्ता भी सुधार सकते हैं। यदि हम गरीब लोगों को सस्ते मजदूर समझने की बजाय समृद्ध ज्ञान का स्रोत समझने लगें तो गरीबी निवारण का यह ज्ञान आधारित तरीका इस दिशा मे उठा नया कदम हो सकता है।

इन क्षेत्रों के लोगों का ज्ञान और संसाधन असीम है। क्या हम स्थानीय ज्ञान, हुनर व कला के लिए बाज़ार में मांग पैदा नहीं कर सकते?

इन क्षेत्रों का राजनीतिक ढांचा कमजोर होता है। एक अध्ययन के अनुसार वर्ष १९८७ में (जब देश में भयावह अकाल पड़ा था) मात्र ४० सांसदों ने बैठकर संसद की कार्यवाही मे हिस्सा लिया था। अच्छी बरसात होने से लोगों की समस्याएं भी हल होती है। यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि उन क्षेत्रों में उग्रवादी आन्दोलन अपने चरम पर होते हैं जहां प्रकृति सर्वाधिक कुपित रहती है। लोगों के पास अब अपनी बात कहने का कोई दूसरा तरीका नही बचा है। दुस्साहस सदैव अति को जन्म देता है। आशा करते हैं कि नव वर्ष में संसाधन सम्पन्न-साधन हीन गरीब लोगों के प्रति नीति-निर्माताओं का रवैया कुछ बदलेगा।

अनिल के. गुप्ता

प्रतिभागिता

सामुदायिक गतिविधियों, स्थानीय ज्ञान तथा संरक्षण को बढ़ावा : फ़िलीपींस का एक सर्वेक्षण[1]

हेरलिना हरटाण्टो[2] सेसिल वाल्मोरेस[3]

अपने संसाधनो के प्रबन्धन की जो पद्धति बसाक (फ़िलीपींस के बुकिडोन शहर का एक गांव) में है उससे स्थानीय तलानडिग समुदाय की औरतों को खासा लाभ होता है। इस क्षेत्र में दवाओं की सप्लाई बहुत कम होती हैं, लेकिन यहां देशी दवाओं का बेहद प्रचलन है, देशी दवाओं का ज्ञान भी समृद्ध है। समृद्ध ज्ञान व परम्परा को इन लोगों ने आज भी सहेजा हुआ है। लेखक द्वय डॉ. केरोल कॉल्फ़र, डॉ. लिण्डा बर्टन तथा डॉ. एडा लेपिस के हार्दिक आभारी हैं कि उन्होंने अपना अमूल्य समय व मार्गदर्शन दिया।

फ़िलीपींस के स्थानीय समुदायों की संस्कृति का एक भाग है देशी औषध ज्ञान। यह ज्ञान बेहद प्राचीन है और जांचा-परखा हुआ है लेकिन तब भी फ़िलीपींस के शहरी लोगों ने अपनी परम्परागत देशी दवाओं को अनदेखा किया है। ये लोग आधुनिक दवाओं के हिमायती है। लेकिन तब भी देशी औषध विज्ञान ने आधुनिक विज्ञान के साथ अपना स्थान बना ही लिया। स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरुकता, प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग तथा महंगी होती स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण अब लोग अपनी परम्परागत पद्धतियों की तरफ लौटने लगे हैं। बुकिडोन शहर के बसाक गांव की तालानडिंग जाति के लिए यह बात सर्वथा सत्य है।

तलानडिंग समुदाय ने ही सबसे पहले जैविक औषधियों का प्रयोग करना शुरु किया था। जब इसका कोई खास असर होता तब ये लोग वैद्य के पास जाते और उससे धार्मिक पूजा-पाठ करवाते। इस सबके पीछे इन लोगों की मान्यता होती है कि रोग को किसी प्रेत आत्मा ने घेरा हुआ है (सावे, २००२)। यद्यपि यह पद्धति अब लोकप्रिय नहीं है। अब अधिकांश लोग स्वयं ही दवा खा लेते हैं या कुछ लोग परम्परागत और आधुनिक पद्धति को मिला कर दवा लेते है या डॉक्टर को दिखाते हैं (बर्टन, २००२)।

यहां प्रसव से जुड़े स्वास्थ्य का जिम्मा स्वास्थ्य विभाग का नहीं बल्कि म्युनिसिपल तथा बारनगेय (गांव) की सरकार का है। वर्ष १९९१ में यह विभागीय हस्तांतरण किया गया। तभी से स्वास्थ्य संबन्धी सेवाओं की गुणवत्ता की पूरी जिम्मेदारी गांव की सरकारों पर आ गयी।

बसाक में कुल आठ बारनगेय स्वास्थ्य कर्मी तथा एक दाई है जो सीमित इलाज कर सकते हैं। जैसे प्रसव पूर्व जांच करना, गर्भनिरोधक गोलियां देना आदि।

मां बनने जा रही औरतों को स्वास्थ संबन्धी जानकारी देना या इस तरह के ही अन्य कार्य करने में भी ये लोग असमर्थ होते हैं। समय और इच्छा की कमी भी इसके लिए जिम्मेदार है। सुविधाओं और साधनों की कमी के कारण बारनगेय स्वास्थ्य कार्यकर्ता बढ़ती बीमारियों और बच्चों के कुपोषण से सामना नहीं कर पाते।

इस लेख के द्वारा हम जानने की कोशिश करेगें कि किस तरह तलानडिग की महिलाओं ने महत्वपूर्ण स्थानीय समस्याओं के व्यवहारिक हल खोजे। ये पद्धतियां आनुवांशिक संसाधनो के संरक्षण में भी समान रुप से कारगर है।

सामुदायिक अनुसंधान (PRA- Participatory Research Action) पर किया गया यह अध्ययन वर्ष २००१ के प्रारम्भ से २००२ के अन्त तक बसाक में किया गया।

बारनगेय बसाक, बुकिडोन

बुकिडोन प्रान्त का बसाक गांव कितगलाड पहाड़ों के दक्षिण पश्चिम में स्थित हैं। कितंलगाड के जंगलो में पशुओं और वनस्पतियों की कई महत्वपूर्ण प्रजातियां पायी जाती हैं। इनमें से कई स्थानीय प्रजातियां लुप्तप्राय है। बुकिडोन के बिगड़ते पर्यावरण के पीछे कई कारण है; जैसे- बढ़ती जनसंख्या, भूमि पर अवैध कब्जे, खेती की बदलती पद्धति आदि। कितगंलाड का पहाड़ी क्षेत्र इसलिए भी विशेष महत्व रखता है क्योंकि यहा स्थानीय जनजातियों का निवास है। इनमें तलानडिग समुदाय की आबादी सर्वाधिक (तकरीबन १,००,०००) है।

ACM परियोजना के तहत तलानडिग की महिलाओं द्वारा विकसित किया गया औषधिय बगीचा

तलानडिग जनजाति पहले खेतिहर हुआ करती थी (सावे, २००२)। कुछ समय बाद इन लोगों ने खेती के साथ-साथ जंगल से संसाधन जुटाने शुरु कर दिये।

धुमन्तू लोगों ने खेती के चिरपरिचित तरीके को अपनाया जिसमें रासायनिक खाद के प्रयोग पर अधिक जोर था। आज हालत ये है कि बिना रासायनिक खाद के इनकी फ़सल उगती ही नहीं है।

बारनगेय बसाक का क्षेत्रफ़ल २,८०० हेक्टेयर भूमि है। यहां कुल ७५० घर है

१. इस पत्र को CAPRI, रोम द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया था। यह कार्यशाला बौद्धिक सम्पत्ति अधिकारों, सामुदायिक कार्यो तथा संसाधनों के संरक्षण के लिए थी। एशियन विकास बैंक (ADB) द्वारा प्रायोजित अध्ययन के तहत यह लेख लिखा गया था। अध्ययन का विषय था, प्लानिंग फॉर सस्टेनेबिलिटी ऑफ फॉरेस्ट थ्रू एडेप्टिव को मैनेजमैन्ट।

२. सेन्टर फॉर इन्टरनेशनल फॉरेस्ट्री रिसर्च (CIFOR) ई. मेल- h.hartanto@cgiar.org

३. आप पहले जेवियर यूनिवर्सिटी के रिसर्च इन्स्टीट्यूट ऑफ मिण्डानाओ कल्चर के साथ कार्यरत थी। इन्होंने हाल ही में बसाक में जैव विविधता पर एक अध्ययन किया है। ई.मेल -cesv02@yahoo.com

तथा ४,००० लोगों की आबादी है। आबादी का ९५% तलान डिग जाति से है, शेष ५% लोग धुमन्तू है।

अनुकूलित साझा प्रबन्धन

प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन की दो अवधारणाओं के समावेश से यह अनुकूलित साझा प्रबन्धन पद्धति अस्तित्व में आयी। ये दो अवधारणाएं है (१) साझा प्रबन्धन (२) अनुकूलित प्रबन्धन। पहली अवधारणा संसाधनों के अधिक भोग पर बल देती है (फ़िशर, १९९५, एण्डरसन, १९९८, बोरिनी फेयरबेन्ड, २०००), जबकि दूसरी अवधारणा प्रकृति के साथ सामजंस्य पर बल देती है। यह अवधारणा मिल जुल कर सीखने पर बल देती है।

प्रसव से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं को जानने के बाद आठों बारनगेय स्वास्थ्य कर्मियों तथा एक महिला कर्मी ने मिलकर अपना एक फोरम बनाया। कभी-कभी बारनगेय कप्तान तथा बारनगेय अधिकारी भी इन्हें राय मशवरा देने आते। धीरे-धीरे और भी लोग इस समूह से जुड़ने लगे।

ये सभी लोग मिल बैठकर अपनी समस्याओं पर बात करते और समाधान भी ढूंढते। धीरे-धीरे इन लोगों ने बसाक की स्वास्थ्य से जुड़ी बहुत सी समस्याएं खोज डाली। सबसे बड़ी समस्या थी दवाओं की कमी- आधुनिक व परम्परागत दोनों ही तरह की दवाएं उपलब्ध नहीं थी। इन लोगों ने तय किया कि ये बसाक की परम्परागत जैविक दवाओं को पुर्नजीवित करेगें। इन दवाओं को बनाने के लिए प्रयोग में आने वाले पौधे आस-पास ही पाये जाते थे। यह तय हुआ कि एक छोटा बगीचा विकसित किया जाएगा जिसमें औषधीय पौधे लगाये जायेगें।

पौधों की जानकारी जुटानी शुरु की। सबने मिलकर उन पौधों की सूची बनायी जो बहुत अधिक प्रयोग किये जाते थे। प्रारम्भ में इन्हें ३४ औषधीय प्रजातियां मिली, जिनमें से २४ प्रजातियां ऐसी थी जो आस-पास में आसानी से उपलब्ध थी तथा १० प्रजातियां केवल जंगल में ही मिलती थी। प्रचलित २४ प्रजातियों में यूकेलिप्टस और माद्रे दे केकेओ *(Gliricdia sepium)* के पेड़ों को छोड़कर सभी जड़ी-बूटियां थी। जबकि जंगल में मिली १० प्रजातियों में पेड़ और जड़ी-बूटी दोनों ही थे। यहां निरगुंडी *(Vitex negundo)*, हिलबास *(Artemesia vulgaris)* तथा एंजेलिका *(Bryophyllum pinnatum)* बहुतायत में थे। हर एक व्यक्ति को पौधे लाने का कार्य सौंपा गया था। एक निश्चित तारीख पर सभी लोग एकत्र होकर पौधों की जांच-परख करते। कुछ लोग ऐसे भी होते जो पौधों से परिचित न होने के कारण पौधे जुटा नहीं पाते। पौधों की जगह की जानकारी नहीं होना भी इसका एक कारण था, बाद में इन लोगों ने तय किया कि जो २४ तरह के पौधे उन्हें मिले है उन्हीं से अपना कार्य शुरु करेंगे। सबने मिलकर जमीन तैयार की और पौधे उगाये। जड़ी-

> पारंपरिक और वर्तमान चिकित्सा पद्धति की अनुपलब्धता ही सबसे प्रमुख स्वास्थ्य संबंधी समस्या थी। इस समूह ने हर्बल चिकित्सा को पुर्नजीवित किया क्योंकि हर्बल चिकित्सा हमेशा से इनकी सामुदायिक संस्कृति रही है।

बूटियों के अलावा खाद्य फ़सल भी उगायी गई जैसे - पीचेई *(Brassica chinensis)*, पाटोला *(Luffa acutangula)* लौकी और कुछ फूल इत्यादि। बारनगेय अधिकारी की मदद से पानी की व्यवस्था की गई। कुछ दिनों बाद जड़ी-बूटियों का एक अन्य बगीचा तैयार किया गया। जो लोग पहले बगीचे से दूर रहते थे, यह उन लोगों के लिए था। बारनगेय कार्यकर्ता यहां से खाना पकाने के लिए सब्जी भी ले सकते थे। लोगों को अपने घरों में जड़ी-बूटी लगाने के लिए प्रेरित किया जाता था। इसके लिए बगीचे से कलम ली जा सकती थी। कुछ लोग बिना अनुमति लिये इस बगीचे से पौधे ले लेते थे। तब यह मुद्दा उठा कि कौन-कौन यहां से पौधे ले सकते हैं। बगीचे की रक्षा के लिए भी एक समिति बनायी गई।

कातिलंग बाने नामक स्थानीय गैर सरकारी संस्था ने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण के दौरान घरेलू दवा बनाना, कफ सीरप बनाना, अदरक द्वारा मालिश का तेल बनाना, सम्बोंग *(Blumea balsamifera)* की चाय बनाना तथा अक्कापुल्को *(Cassia alata)* से साबुन बनाना सिखाया गया।

इस तरह बढ़ा ज्ञान, समझ और संरक्षित हुए संसाधन

तलानडिग लोगों की परम्परा का भाग है मिल-जुलकर काम करना। मिलकर काम करने के सबके तरीके अपने-अपने हैं। इसी तरह का एक समूह है "पाहिना" जो निःशुल्क कार्य करता है। बारनगेय स्कूल के चारों तरफ जाली लगाना या मरम्मत करना इस दल का कार्य है। लियुवा नामक दल इनके साथ मिलकर काम करता है। ये सब बारी-बारी से कार्य करते हैं। बहुत से परिवार मिलकर एक लियुबा का गठन करते हैं। यद्यपि अब इस तरह के लियुवा नजर नहीं आते।

यहां की महिलाओं ने जब देखा कि CIFOR से उन्हें किसी तरह की वित्तीय सहायता नहीं मिल सकती, तब सभी ने सामूहिक कार्य करने का निश्चय किया। इन महिलाओं ने मिलकर पाहिना का गठन किया, फिर बीज एकत्र किये, जमीन तैयार की, बीज बोये तथा अपने बगीचे की सार-संभाल की। महिलाओं और बच्चों ने भी इनकी मदद की। लियुवा व्यवस्था को आधार बनाकर ये महिलाएं अपने-अपने घरों में एक-एक जड़ी-बूटी की बगिया बनाने की योजना बना रही हैं। अब तक की सारी गतिविधियां मिल जुलकर की गई और कोई खास परेशानी नहीं उठानी पड़ी।

यद्यपि पूर्व में महिलाएं बारनगेय की सभी गतिविधियों में भाग लेती थी, लेकिन आम तौर पर महिलाओं को खाना बनाने जैसे सहायक कार्य ही सौंपे जाते थे। लेकिन इस प्रयास के बाद महिलाएं हर गतिविधि के केन्द्र में आ गयी। इससे महिलाओं को जीत की खुशी का अहसास हुआ। इन लोगों को प्रेरणा दी जाती है कि ये लोग छोटे स्तर पर प्रयोगात्मक रुप से कार्य करें तथा बाह्य साधनों पर निर्भर न रहकर जो कुछ संसाधन उपलब्ध है उन्हीं से कार्य करने का प्रयास करें। यह प्रयोग काफ़ी सफ़ल रहा और छोटी-छोटी सफ़लताओं से ही बड़ा कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

इस प्रोजेक्ट से पुरुषों तथा महिलाओं के ज्ञान का आदान-प्रदान बढ़ा। तलानडिग के पुरुषों को जंगल में पायी जाने वाली

तलानडिग की महिलाओं की सामूहिक गतिविधियों का एक दृश्य

जड़ी-बूटियों की अधिक जानकारी होती है। जबकि वहां की महिलाओं को प्रचलित जड़ी-बूटियों का ज्ञान होता है। स्थानीय गैर- सरकारी संस्था से जुड़ने के बाद ज्ञान की भी वृद्धि हुई। बारनगेय के निवासियों ने इस दौर में फ़ल-सब्जियां तथा जड़ी-बूटियां उगायी। लोगों ने बीज और कलम द्वारा पौधों का आदान-प्रदान भी किया।

निष्कर्ष

स्वास्थ्य के स्तर पर सरकार की असफ़लता के प्रत्युत्तर के रुप में बारनगेय की महिलाओं ने यह सामूहिक गतिविधि प्रारम्भ की। दवाओं की कमी, बढ़ते दाम और गरीबी जैसी समस्याओं के कारण महिलाओं में काफ़ी आक्रोश था। सात महीनों के छोटे समय में ही इन लोगों को संतोषजनक सफ़लता मिली। यदि इन लोगों के प्रयासों को सही राह दिखाई जाये तो इस क्षेत्र के संसाधनों के संरक्षण में यह महान भूमिका निभा सकते हैं। इससे समुदाय की स्वास्थ्य संबन्धी सेवाओं पर भी बेहतर प्रभाव देखने को मिला।

सफ़लता तो मिली, पर चुनौतियां अभी बहुत है। इन लोगों में अभी भी आत्मविश्वास की कमी है। तभी तो पूर्वनिर्धारित योजना को शक्तिशाली व्यक्ति के कहने पर बदल दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर देखें, ये लोग दाई के दिशा-निर्देश मानते थे तथा इन्होंने जांच-परख वाले रजिस्टर को हाजिरी का रजिस्टर मात्र बना दिया जो स्वयं के निर्णय की ही अवेहलना थी।

संदर्भ-

एण्डरसन, जे, क्लिमेन्ट, जे.एण्ड क्रोडर, एल. वी. १९९८ एकोमोडेटिंग कनफिलक्टिंग इन्टरेस्ट इन फ़ोरेस्ट्रि-कनसेप्ट्स एमर्जिंग फ्रॉम प्लूरलिज्म, यूनसिल्वा ४९ (१९४) : ३-१०।

बोरिनी-फेयरबेन्ड, फेरवर, एम टी, नदानगेन्ग, V 2000 को- मैनेजमेन्ट ऑफ नैचुरल रिसोर्सेजः ऑर्गेनाइजिंग, निगोशिएटिंग एण्ड लर्निंग बाय डूंइग, हैडलबर्ग- कसपारेक वेरलाग।

बर्टन, ई एम २००२ प्रोफाइल एण्ड बेसलाइन स्टडी ऑफ बारनगेय बसाक, लन्टापन, बुकिडोन ए. सी. एम. प्रोजेक्ट, इन्टरनल रिसर्च रिपोर्ट, CIFOR, बोगर।

फ़िशर आर. जे., १९९५, कोलोबरेटिव मैनेजमेन्ट ऑफ फॉरेस्ट्स फॉर कन्ज़रवेशन एण्ड डेवलपमेन्ट, ग्लाण्ड : IUCN &WWF।

सावे, वी. एल २००२ द तलानडिग (www.ncca.gov.ph.)।

वालमोर्स, C2002 हिस्टोरिकल ट्रेण्ड्स ऑफ एसीएम साइन इन लंटापन, ए.सी.एम. प्रोजेक्ट/ RJMCU इन्टरनल रिसर्च रिपोर्ट, CIFOR, बोगर ।

वाल्टर्स, C1986 एडेप्टिव मैनेजमेन्ट ऑफ रिन्युएबल रिसोर्सेज़ न्यूयोर्क- मैकमिलान।

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान, भारत

परम्परागत ज्ञान तथा गैर सहायता प्राप्त तकनीकी नवसृजनों की पहचान व सम्मान हेतु राष्ट्रस्तर की पांचवी द्विवार्षिक प्रतियोगिता

भारत सरकार के विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान की स्थापना की गई। स्थानीय नवसृजनों व परम्परागत ज्ञान का निरीक्षण व संरक्षण करना इस संस्थान का उद्देश्य है।

प्रतियोगिता के बारे में

गैर सहायता प्राप्त स्थानीय नवसृजनों तथा परम्परागत ज्ञान की चौथी प्रतियोगिता के लिए रा.न.प्र. आवेदन आमंत्रित करता है। आप यदि विद्यार्थी हैं, शिल्पी, किसान, मैकेनिक, मछुआरे अथवा समाज के किसी भी तबके से हैं तो आवेदन कर सकते हैं। आपने कोई आयुर्वेदिक दवा बनायी हो, पौधे की नवीन प्रजाति विकसित की हो, परिवहन का कोई सुगम साधन बनाया हो या दैनिक जीवन की आवश्यकता से जुड़ी कोई खोज की हो तब भी आवेदन कर सकते हैं।

पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ तीन नवसृजनों को क्रमशः १,००,०००, ५०,००० तथा २५,०००रु. का नगद पुरस्कार दिया जाएगा। तीन सर्वश्रेष्ठ निरीक्षकों को ५०,०००/, २५,०००/ तथा १५,००० रुपये का प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार दिया जाएगा। एक नवसृजक तथा एक निरीक्षक को ७,५०० रु. का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाएगा। चयनित नवसृजनों को परम्परागत ज्ञान व स्थानीय तकनीकी नवसृजनों की राष्ट्रीय पंजी में शामिल किया जाएगा।

प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए

आप व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रुप से अपना आवेदन भेज सकते हैं। आवेदन सादे कागज पर होना चाहिए तथा साथ में (१) नवसृजन की पूरी जानकारी (२) नवसृजन तथा नवसृजक की पृष्ठभूमि भी हो। यदि नवसृजन से संबधित फ़ोटो या फ़िल्म है तो वह भी भेजें। पौधे या औषधी से सम्बन्धित नवसृजन के लिए पौधे का नमूना भी भेजें ताकि हम उसका सत्यापन कर सकें। पांचवी प्रतियोगिता जनवरी २००५ से दिसम्बर २००६ तक आयोजित की जाएगी।

आप अपने आवेदन निम्न पते पर भेज सकते हैं-
राष्ट्रीय समन्वयक, राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान बंगला न. १, सैटेलाइट कॉम्पलैक्स, प्रेमचंदनगर रोड, अहमदाबाद- १५ गुजरात-, फैक्स न. (०७९)- २६७३ १९०३, फ़ोन न. - ०७९-२६७३२४५६, campaign@nifindia.org

Co-sponsors
IIM A
SRISTI
CSIR
Honey Bee Network

नारियल छीलने की जयसीलन विधि

आर. जयसीलन की नारियल छीलने की मशीन को देखकर यह साबित हो जाता है कि नवसृजक अपनी लगन और मेहनत से बड़ी से बड़ी मुश्किल भी हल कर सकता है। जयसीलन के पास अपना नारियल का खेत है, नारियल छीलने में लगने वाले समय और परेशानी से जयसीलन परिचित हैं। उन्हें विश्वास था कि नारियल छीलने की आसान विधि अवश्य होगी, इसी विश्वास के चलते यह नवसृजन हो सका। कदम-कदम पर साथ देने वाली पत्नी और नवसृजकों की एक संस्था (जयसीलन इसके अध्यक्ष है यह सेवा मदूरै के सहयोग से संचालित होती है) के सहयोग से यह नवसृजन जन्म ले सका। जयसीलन ने अपना पुरानी मशीन को सुधार कर आठ यूनिट वाली यह मशीन विकसित की।

नारियल के व्यापार से जुड़ा हर एक व्यक्ति जानता है कि नारियल का छिलका उतारना सर्वाधिक टेड़ा काम

है। चवालीस वर्षीय जयसीलन सात एकड़ क्षेत्र में फैले नारियल तथा आम के बगीचे के मालिक है। जयसीलन के पिता फौज में नौकरी करते थे, उनकी इच्छा थी कि परिवार के नारियल के व्यवसाय को बेटा आगे बढ़ाये। दसवीं कक्षा तक पढ़ने के बाद जयसीलन ने पढ़ाई छोड़ कर परिवार के पैतृक धन्धे को अपना लिया। जयसीलन के भाईयों ने अपनी पढ़ाई जारी रखी, एक भाई डॉक्टर है तथा एक पुलिस सब इंसपेक्टर। जबकि जयसीलन एक नवसृजक के रुप में समाज की सेवा कर रहे है। जयसीलन न केवल अपने बगीचे के नारियल एकत्र करते, बल्कि आस पास के किसानों के नारियल भी एकत्र कर स्थानीय व्यापारी को बेचते हैं। यह व्यापारी अन्य राज्यों को नारियल की सप्लाई करता है। नारियल की खेती करने वाले सभी किसान दिहाड़ी पर मजदूर रखते हैं जो नारियल छीलने का काम करते हैं।

जयसीलन लम्बे समय से ऐसे तरीके की तलाश में थे जिससे नारियल छीलने के श्रम और समय दोनो से बचा जा सके। धीरे-धीरे यह खोज जयसीलन की सनक बनती गयी। वे रात-दिन इसी के बारे में सोचते रहते। गांव से अस्सी किलोमीटर की दूरी पर तिलागरथिडाल मे साप्ताहिक बाज़ार लगता है, वहां जयसीलन नारियल बेचने जाते थे, धीरे-धीरे तिलागरथिडाल की यात्राएं बढ़ने लगी, वे वहां अधिकाधिक समय बिताने लगे, क्योंकि वहां वे अपने नवसृजन पर अच्छी तरह विचार कर पाते थे। इस समय तक वे इस मशीन पर एक लाख से भी अधिक खर्च कर चुके थे।

गांव के अधिकतर लोग उन्हें पागल समझने लगे। गांव वालो को लगता कि वे न जाने व्यर्थ ही किसी मशीन के पीछे पड़े हैं परन्तु उनकी पत्नी उनकी लगन का सम्मान करती थी और हमेशा उनका साथ देती थी। लेकिन उन्होंने अपने अटल विश्वास और दृढ़ता का एक बार और परिचय दिया

(वे कबड्डी के खिलाड़ी थे तथा जिला स्तर पर टीम का नेतृत्व भी कर चुके थे) और नारियल छीलने की उत्कृष्ट मशीन बनाने में जुटे रहे।

वर्ष १९९१ में वे इस व्यवसाय से पूरी तरह जुड़े थे तथा १९९९ में इस समस्या का हल खोजने में अपने अमूल्य आठ महीने लगा दिये।

नवसृजन के विकास की कहानी प्रारम्भ में जयसीलन ने तीन ब्लेड वाला मॉडल विकसित किया। जिसमें एक ब्लेड नारियल की जटा के अन्दर जाती और दूसरी दो ब्लेड इसे छीलने में मदद करती। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में काफी समय लगता था। नतीजतन जयसीलन दो ब्लेड वाली मशीन बनाने मे जुट गए। दो ब्लेड वाली मशीन अपेक्षाकृत अधिक कारगर थी। उन्होंने इसमें और सुधार करने का निश्चय किया। एक बेल्ट तथा लोहे की बेलनाकार छड़ी की मदद से इसमें १.५

जयसीलन (बांये से पहले) नारियल छीलने की मशीन पर कार्य करते हुए

अश्वशक्ति की मोटर लगायी। लोहे की छड़ी के ऊपरी भाग पर दो ब्लेड लगायी। ये दोनों ब्लेड ३/४ इंच लम्बी थी तथा एक इंच की दूरी पर लगायी गयी थी। ब्लेड के घूमने पर नारियल की जटा आसानी से निकल जाती थी। इस मशीन को एक स्विच द्वारा आसानी से चलाया जा सकता था। प्रारम्भ में स्विच को केवल हाथ से ही चलाया जाता था, परन्तु बाद में मशीन में और सुधार किया गया, अब पैर से भी स्विच दबाया जा सकता था।

इस तरह की छह यूनिट को मिलाकर एक मशीन बनायी गई। प्रत्येक यूनिट को १.५ अश्वशक्ति की मोटर से जोड़ा गया था। इस मशीन से नारियल की जटा चार चरणों मे उतारी जा सकती है तथा कुछ भाग नारियल पर जस का तस छोड़ दिया जाता है। इससे नारियल इधर से उधर ले जाने में भी खराब नहीं होते। एक नारियल को पूरा छीलने के लिए मशीन चलाने वाले को चार-पांच बार नारियल को मशीन में डालना पड़ता है। एक घण्टे में औसतन १५० नारियल की जटा उतारी जा सकती है। आठ घण्टे की एक दिहाड़ी में ७,२०० नारियल छीले जा सकते हैं। मशीन की छः इकाईयों को चलाने के लिए छः मजदूरों की आवश्यकता पड़ती है। ५० रु. मजदूर की दर से ३०० रु मजदूरी तथा ३६ रु. (३ रु. प्रति यूनिट की दर से १२ यूनिट के लिए) बिजली खर्च, अर्थात् ३३६ रु. कुल खर्च आता है।

आखिर पहचान मिल ही गयी स्थानीय स्तर पर कार्य करने वाली गैर सरकारी संस्था सेवा (SEVA) से जयसीलन ने NIF द्वारा आयोजित

उपरोक्त जानकारी पी. विवेकानन्दन (सेवा) तथा हनी बी नेटवर्क के संयोजन द्वारा उपलब्ध की गई है। *Email: numvali@sancharnet.in*

परम्परागत ज्ञान व स्थानीय नवसृजनों की प्रतियोगिता के बारे में सुना था। सेवा ने जयसीलन को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। जयसीलन ने तमिलनाडु राज्य का पुरस्कार जीता। उन्हें २५००० रु. की नगद राशि मिली, स्थानीय अखबारों में उनकी खबर छपी। अपने गांव और आसपास के क्षेत्रों में उन्हें खासा सम्मान मिला।

उन्होंने अपनी मशीन के लिए १३,५०० रुपये का मूल्य निश्चित किया है। वे नारियल व्यापारी संघ के सक्रिय

योजना आयोग के सह अध्यक्ष के.सी.प
पुरस्कार लेते जयसीलन

सदस्य हैं, इस नाते वे अन्य लोगों को भी यह मशीन खरीदने की प्रेरणा देते हैं। अब तक वे ऐसी ३० मशीनें बेच चुके हैं। सेवा की मदद से उन्होंने इस नवसृजन के लिए पेटेन्ट भी ले लिया है। अब इस मशीन का डिज़ाइन चोरी होने का भी डर नहीं है।

तकनीकी सुधार - अनुसंधान की संभावना

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान- मुम्बई के इंजीनियरिंग के विद्यार्थी सुन्दर मोहन ने इस नवसृजन के सुधार - विकास में NIF के माध्यम से मदद की। श्री मोहन ने चार ब्लेड वाला एक मॉडल तैयार किया है जिसमें ऊपर से नारियल डाले जाते हैं। जयसीलन इस मॉडल से सन्तुष्ट नहीं है। यद्यपि यह मशीन दिखने में पुरानी मशीन से अधिक सक्षम दिखती है, परन्तु इसमें एक ही बार में पूरा नारियल छीला जाता है। इसके लिए एक ही आकार के नारियल होना जरुरी है जो संभव नहीं है।

जयसीलन स्वयं इस मशीन में सुधार करने की कोशिश कर रहे हैं। इस मशीन में छः अलग-अलग इकाईयां हैं, किसी भी एक इकाई को बन्द करने के लिए पूरी की पूरी मशीन बन्द करनी पड़ती है। नतीजा यह होता है हर महीने मशीन का बेल्ट बदलना पड़ता है जो ३,०००-४,००० रुपये का होता है। इससे मशीन के स्विच तथा कॉयल पर भी भार पड़ता है। इन सब परेशानियों के चलते मशीन पर काफ़ी खर्चा हो जाता है। जयसीलन ने नवसृजकों के एसोसिएशन की बैठक में इन समस्याओं पर चर्चा की (सेवा के सहयोग से गांव के साठ नवसृजकों

> नारियल के व्यवसाय से जुड़े मजदूरों को इस मशीन से बेहद लाभ हो सकता है। लेकिन बिना किसी संस्थागत सहायता के मजदूर अकेले किसी तकनीक का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकते। NIF उन संस्थाओं के साथ जुड़ने का इच्छुक है जो मजदूर संघो अथवा समूहों में सस्ती दर पर यह मशीन देने मैं सहायता देता है।

ने मिलकर अपनी एक संस्था बनायी है)। साथी नवसृजक मनोहरन ने सुझाव दिया कि ६ के स्थान पर ८ यूनिट वाली मशीन बनाकर इसमें २ अश्वशक्ति क्षमता की मोटर लगायी जाये तथा इसमें शाफ्ट, व्हील और गीयर मैकेनिज्म जोड़ा जाये। मनोहरन व बालन दो नवसृजक जयसीलन को नारियल छीलने की मशीन बनाने में मदद कर रहे हैं। इन मित्रों की मदद से पुरानी मशीन में दो अश्वशक्ति की मोटर व दो फ्लाइव्हील लगाए गए। केन्द्रीय शाफ्ट के घूमने पर छीलने वाली ब्लेड चलती है। साथ लगे दो फ्लाई व्हील की मदद से शाफ्ट की गति नियन्त्रित की जाती है। इसमें गीयर और क्लच भी लगाए गए है। मशीन के इस परिवर्धित प्रारुप से एक घण्टे में १००० नारियल छीले जा सकते हैं। इस मॉडल में अलग से बैल्ट व स्विचबोर्ड नही है।

दुर्भाग्य की बात है कि तमिलनाडु सरकार ने आधिकारिक तौर पर इस नवसृजन को नहीं अपनाया है।

मजदूरों का डर

अपने नवसृजन के विकास के लिए जयसीलन को सरकार से कोई सहायता नहीं मिली है, परन्तु यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। स्थानीय मजदूरों को डर है कि इस मशीन के प्रचलन में आ जाने से उनकी मजदूरी खत्म हो जाएगी। कुछ मजदूरों ने विरुद्धनगर के जिला कलेक्टर के समक्ष प्रदर्शन भी किया। जिला कलेक्टर ने मजदूरों की बात सुनी और अपनी भी कही। कलेक्टर महोदय ने मजदूरों को याद दिलाया कि जब चावल की भूसी निकालने की मशीन बाज़ार में आयी थी तब वह किस तत्परता से प्रचलन में आयी थी और मजदूरों को खासा घाटा उठाना पड़ा था। उन्होंने मजदूरों से कहा कि वे इस मशीन का विरोध न करे, क्योंकि यह उनके अपने आदमी ने ही बनायी है और इसे चलाने में मजदूरों की आवश्यकता भी पड़ती है। अब किसी भी मजदूर को जयसीलन की इस मशीन से आपत्ति नहीं है।

मुनाफ़े का व्यापार

नारियल के धन्धे में नारियल की गिनती नही होती, बल्कि नारियल के थैलों के हिसाब से पैसे चुकाये जाते हैं। जयसीलन के नारियल पूरी तरह छीले हुए नहीं होते, इस कारण ६०-६५ नारियल ही एक थैले में आ पाते है। जबकि साधारणतया १०० छीले हुए नारियल से एक थैला भरता है। इस तरह जयसीलन की आमदनी में १०,००० से १५,००० रुपये की बढ़ोतरी हुई है।

जयसीलन सात रुपये प्रति १०० नारियल के हिसाब से मजदूरी देते हैं। पहले इतने ही नारियल के लिए दस रुपये देने पड़ते थे। पहले जितने समय में १००० नारियल भरे जाते थे, अब उतने ही समय में १२०० से भी ज्यादा नारियल भर दिये जाते हैं। जयसीलन मशीन से छीले गए इन नारियलों पर थोड़ा भूसा छोड़ दिया जाता है इससे नारियल लाना ले जाना आसान होता है, नारियल के टूटने का डर नहीं रहता। अब औरतें भी आसानी से यह कार्य कर सकती है। मशीन को बैठ कर भी चलाया जा सकता है।

इस समय जयसीलन छीले हुए नारियल के ट्रक गुजरात, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश भेजते हैं।

भविष्य पर नजर

जयसीलन अपनी मशीन के परिवर्धित प्रारुप के मानकीकरण में लगे हैं। वे इस आठ यूनिट वाली मशीन का पेटेन्ट लेना चाहते हैं। आठ यूनिट वाली इस मशीन को जयसीलन ५०,००० से ६०,००० रुपयों में बेचना चाहते हैं। इस नवसृजन की लोकप्रियता से दुनिया के कितने ही मजदूरों को लाभ होगा, क्योंकि पूरी दुनिया में लाखों नारियल हाथ से छीले जाते हैं। हम कामना करते हैं कि नारियल छीलने वाले मजदूरों की संस्थाए इन मशीनों को अपनाएं ताकि इन मजदूरों की मेहनत कम हो सके तथा लाभ भी मिल सके।

जंगल की रक्षा का जिम्मा : सामुदायिक संरक्षण का नमूना

महाराष्ट्र के धूले जिले के बारिपाडा गांव के लोगों ने सामुदायिक संरक्षण का अद्‌भुत नमूना पेश किया है। दो गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग से गांव के लोगों ने घटते जा रहे जंगल को न केवल रोका, बल्कि वनीकरण और ऐसी ही दूसरी गतिविधियां प्रारम्भ कर के राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान भी बनायी। ग्रामीण जीवन के ज्ञान व नवसृजन पर आधारित एक प्रतियोगिता में इस गांव ने पुरस्कार भी जीता। रोम की संस्था इन्टरनेशनल फण्ड फोर एग्रीकल्चरल डेवलपमेन्ट तथा सृष्टि द्वारा वर्ष २००३ में आयोजित यह प्रतियोगिता एशियाई देशों के लिए थी।

सरकारी संरक्षण के आधीन जमीन में प्राकृतिक संसाधनों का रखरखाव करना आसान काम नहीं है। प्रकृति के प्रति सरकार का नज़रिया, सरकार के कानून-कायदे वैसे नहीं होते जैसे जनसामान्य के होते है, परन्तु कई बार व्यवहारिक और कानूनी बातों के सामंजस्य से बेहतर परिणाम मिलते हैं, जैसा कि बारिपाडा में हुआ। महाराष्ट्र के धूले जिले के साकरी संभाग के अन्तर्गत आने वाला बारिपाडा गांव सघन वन्य क्षेत्र है। ४४५ हैक्टेयर में फैले जंगल में करोंदे *(Carissa carandas)*, गुमा माधुपति *(Leucas cephalotes)*, महुआ *(Madhuca indica)*, सागौन *(Tectona grandis)*, पलाश *(Beutea monosperma)*, पांग्रा *(Erythrina indica)*, सैन (*Terminalia tomentosa)*, कुम्भिका *(Careya arborea)* तथा नीम के पेड़ है।

स्थानीय लोगों को इस विशाल जंगल के चलते बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। सागवान की अवैध कटाई होने लगी थी कुछ प्रजातियों का विनाश हो रहा था। गांव के पास की पहाड़ी जो हमेशा ही हरी रहती थी, धीरे-धीरे बंजर हो रही थी। गांव के इस हाल से गांववासी चिन्तित थे, गांव के जागरुक नौजवान चैतराम पवार ने कुछ और चिन्ताजनक बाते देंखी। जलावन की लकड़ी में कमी आ रही थी, गांव में पैतीस कुएं थे, जिसके एक तिहाई सूखे थे। जीवन का गुजारा करने के लिए गांव की महिलाओं ने शराब बनाना शुरु किया जिससे और कई तरह की समस्याएं उठ खड़ी हुई। चैतराम पवार को लगा कि गांव की आबो-हवा बचाने के लिए कुछ करना चाहिए। श्री पवार ने एक NGO वनवासी कल्याण आश्रम के साथी डॉ. गजानन पाठक से मदद मांगी। डॉ. पाठक जन सेवा संस्थान के साथ भी जुड़े थे, यह संस्थान भी चैतराम पवार को मदद देने आगे आयी। कुछ समय बाद वन विभाग ने भी मदद का हाथ बढ़ाया।

गांव वालो से बात करते हुए चैतराम पवार

हाथ से मिला हाथ

पवार ने गांव के लोगों को समझाया और प्रेरित किया कि गांव के संरक्षण के इस काम में आगे आए। पवार ने गांववासियों को सचेत किया कि यदि जंगल कटता गया तो जलावन की लकड़ी, फ़ल- खाद्यान्न और दूसरी बहुत सारी चीजों की कमी आ जाएगी। मई १९९३ में गांव के लोगों ने मिलकर जंगल बचाओ समिति बनायी। शुरुआत में कुछ लोगों को इसके कार्यो पर संदेह था परन्तु धीरे-धीरे विश्वास बनता गया।

नियम-कायदे

यह निश्चित किया गया कि किसी को भी 'जंगल बचाओ समिति' का स्थायी सदस्य नहीं बनाया जाएगा। गांव के प्रत्येक परिवार से बारी-बारी से एक-एक व्यक्ति आकर अपनी सेवाएं देगा। इस तरह इस जन-आन्दोलन में सही रुप से जन-जन की भागीदारी होगी। प्रारम्भ में गांव की वन सम्पदा का प्रयोग केवल गांववासी ही कर सकते थे, परन्तु धीरे-धीरे आसपास के गांवों को भी इसकी अनुमति दे दी गयी। श्री चैतराम पवार को गांव ने जंगल बचाओ समिति का अध्यक्ष चुना। समिति ने घोषणा की कि यदि किसी भी व्यक्ति को अपने लालच के लिए वन सम्पदा का उपभोग करते हुए पाया गया तो उसे दण्डित किया जाएगा। गांव में लगने वाले साप्ताहिक बाज़ार के दिन इस तरह की घोषणाओं को दोहराया जाता।

जंगल बचाओं समिति के नियम इस प्रकार हैं -

१. गांव के दो बुजुर्ग व्यक्तियों को बतौर रक्षाकर्मी रखा जाएगा। ये दोनों व्यक्ति जंगल में होने वाली गतिविधियों पर नजर रखेंगे और समय-समय पर जंगल बचाओं समिति को सूचित करते रहेगें। इन लोगों को १०० रुपये प्रतिमाह मानदेय दिया जाएगा। प्रत्येक वर्ष रक्षाकर्मी बदले जाएंगे। रक्षाकर्मी को दी जाने वाली राशि जुटाने के लिए प्रत्येक घर से ३ रुपये अथवा ७ किलो धान लिया जाएगा।

१. यह लेख डॉ. गजानन पाठक और चैतराम पवार द्वारा दी गयी जानकारी व शैलेष शुक्ला और सृष्टि के अन्य सदस्यों के संकलन पर आधारित हैं।

२. जंगल का कोई भी पेड़ अथवा पेड़ का कोई भाग चुराये जाने पर भी दण्डित किया जाएगा। यदि चोरी की वस्तु सिर पर उठाकर ले जायी जा रही है तो १५/-रु. का दण्ड लिया जायेगा। किसी भी दूसरे तरीके से जंगल से कोई भी वस्तु चुराये जाने पर ७५/- रुपये देने होंगे। कोई भी पशु यदि जंगल में चरते हुए पाया गया तो उसके मालिक से १००० रु. का जुर्माना वसूल किया जाएगा। रक्षाकर्मी के अलावा यदि किसी अन्य व्यक्ति द्वारा चोरी की सूचना दिये जाने पर बतौर इनाम ५०० रु. दिये जाएंगे। सामुदायिक जंगल के आस-पास जिन लोगों के खेत हैं उनकी नैतिक जिम्मेदारी है कि वे जंगल की रक्षा करें।

३. किसी भी व्यक्ति को (चाहे वह गांव का हो या बाहरी) खेत में बैलगाड़ी ले जाने की अनुमति नहीं है।

इन नियमों में बाद में कुछ परिवर्तन भी किये गए। तय किया गया कि पड़ोसी गांव के लोगों को धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों के लिए जंगल से लकड़ी दी जा सकती है परन्तु इसके लिए पूर्वानुमति लेनी होगी। लकड़ी काटने के लिए अनुमति मिलना इस बात पर निर्भर है कि वह किस काम के लिए प्रयोग की जाएगी। एक बार कुछ युवक रात के समय जंगल में लकड़ी काटते पाये गए। पूछताछ करने पर बताया कि शादी का मण्डप बनाने के लिए उन्हें लकड़ी की आवश्यकता है। उन युवकों को रात भर जंगल में रखा गया और सुबह इस नसीहत के साथ छोड़ा गया कि अब वे बिना आज्ञा के लकड़ी नही काटेंगे। कुछ समय बाद यह भी तय हुआ कि साल में ३० दिन ऐसे रखे जाएंगे, जब कि पशु जंगल में आराम से चर सके। इस हेतु पचास एकड़ भूमि की व्यवस्था की गई, इस चारागाह भूमि को प्रतिवर्ष बदला जाता है। सर्दियों में गांववासी जलावन के लिए सूखी लकड़ी भी ले सकते हैं।

सामाजिक व पर्यावरणीय परिवर्तन

इस संस्थान के अस्तित्व में आने के बाद लोगों ने मिल जुलकर काम करना शुरु कर दिया। किसी अच्छे दिन शुभ मुहूर्त देखकर सामूहिक विवाह किये जाने लगे जिससे खर्च में कटौती आयी। अब लोगों के आपसी झगडे भी परस्पर बातचीत से हल होने लगे। झगड़ों के निपटारे में गांव के प्रत्येक परिवार से एक-एक व्यक्ति की उपस्थिति अनिवार्य मानी गई। चोरियां कम होने लगी तथा पेड़-पौधों की चोरी में भी कमी आयी। अब गांववासी पर्यावरण संरक्षण का अर्थ जानने लगे थे, फ़लस्वरुप पानी का फ़िजूल खर्च भी कम हुआ। धीरे-धीरे गांव प्रसिद्धि पाने लगा। भारत सरकार ने गांव को एक लाख रु. की पुरस्कार राशि दी। इस राशि से गांव में गुड़ बनाने की इकाई लगायी गई। इसके द्वारा गांव के पच्चीस लोगों को रोज़गार मिला।

जन सेवा फ़ाउण्डेशन तथा वनवासी कल्याण आश्रम के सहयोग से गांव में विकास कार्य होने लगे। इन कार्यों के तहत शौचालय निर्माण, रसोई का बगीचा (जिसमें रसोई बनाने में लगने वाला पानी ही सींचा जाता था) इत्यादि शामिल थे। वन विभाग ने गांव के इस अनौपचारिक संघ को सामूहिक वन प्रबन्ध योजना में शामिल किया। सागौन *(Tectona grandis)*, धृतकुमारी *(Aloe barbadensis)* आदि पौधे भी लगाये गए।

> चोरी की घटनाओं में कमी आई, पेड़-पौधों की अनियंत्रित कटाई व छँटाई में पूर्णतः रोक लग गयी। वनों की सुरक्षा और संरक्षण से पानी के बहाव से होने वाले नुकसान में कमी आयी।

जन सेवा फ़ाउण्डेशन के सहयोग से बच्चों के लिए नियमित शिविर लगाये जाते है जिनमें पौधों और जीव-जन्तुओं से बच्चों को परिचित कराया जाता है। बच्चों ने बहुत से औषधीय पौधे भी देखे जैसे अश्वगन्धा *(Withania somnifera)*, शतावरी *(Asparagus racemosa)* तथा काली मिर्च (*Piper nigrum*) प्रमुख है। इस तरह के शिविर के द्वारा बच्चे चीता, खरगोश, लोमड़ी, छिपकली आदि जंगली जानवरो के बारे में जान सकते हैं। मोर, तीतर, खंजन, जंगली मुर्गी, आदि कई प्रजातियां भी देखने को मिलती है।

पवार अब तक मिली सफ़लता से काफ़ी खुश है। गांव में पशु-पक्षियों की उम्र भी बढ़ी है और संख्या भी। अब बरिपाडा में जलावन की लकड़ी तथा पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। आस-पास के गांवों में भी पानी सप्लाई की जाती है।

वन संरक्षण विभाग का कहना है कि इन लोगों में 'मैं' की नहीं बल्कि 'हम' की भावना है। डॉ. पाठक एक रोचक घटना बताते है कि गांव में तैनात हवलदार ने एक बार जंगल से लकड़ी काटने हेतु भाडे के लोगों को बुलाया। गांव के लोगों ने पकड़ लिया और हवलदार की पेशी हुई। हवलदार इस घटना से इतना ज्यादा शर्मिंदा हुआ कि उसने अपना तबादला करवा लिया। जबकि यह हवलदार अपने आपको इस क्षेत्र का राजा समझा करता था। यह सब गांव वालों की एकजुटता के कारण ही संभव हुआ।

अन्य कार्यो का श्री गणेश

गत वर्ष पवार के सहयोग से स्थानीय महिलाओं ने गांव के तालाब पर मछली पालन का कार्य प्रारम्भ किया। जनसेवा फ़ाउण्डेशन ने भी इस कार्य में सहयोग दिया।

इस कार्य से महिलाएं बहुत खुश हैं, अब उन्हें शराब बनाने जैसा गैर कानूनी कार्य नहीं करना पडेगा। अपनी सफ़लता से बेहद खुश रंगोबाई पवार कहती है कि, अब बारिपाडा के पुरुष शराब पीकर घर आने से डरते हैं। गांव के लोगो ने मिलकर एक पौधशाला भी शुरु की है।

चैतराम पवार की इच्छा है कि अब वे २०० जोशीले नवयुवकों की सेना तैयार करेंगे जो भविष्य में जैव-विविधता व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण जैसे कार्य करेंगे।

यह आलेख डॉ. गजानन पाठक, चैतराम पवार से हुई बातचीत के आधार पर तैयार किया गया। शैलेष शुक्ला तथा सृष्टि की टीम ने इसे लिपिबद्ध किया।

शुद्धिपत्र

मोटर डॉक्टर : भारत श्री रंग काम्बले पर प्रकाशित आलेख में कहा गया था कि फ़रवरी २००२ में हुई NIF की दूसरी प्रतियोगिता में श्री काम्बले को पुरस्कृत किया गया। दरअसल यह पुरस्कार समारोह दिसम्बर २००३ में हुआ था।

तेरहवीं शोधयात्रा - समय के ज्वार-भाटे की साक्षी

एक मई से आठ मई २००४ के दौरान आयोजित हुई तेरहवीं शोधयात्रा में समुद्र की शांति, लहरों का शोर शोधयात्रियों में जोश भर रहा था। रेगिस्तान और पहाड़ी इलाकों की अब तक की २,२०० किलोमीटर लम्बी यात्रा के बाद तटवर्ती इलाके में चलना पहला अनुभव था। जिस तरह यह शोधयात्रा अपने आप में पहली थी, वैसे ही कई सारे अनुभव भी पहली बार हुए थे। इस यात्रा के दौरान हम एक परिवार के तीन सदस्यों-पति, पत्नी और बहन से मिले, तीनों की उम्र १०० वर्ष से अधिक थी। शोधयात्रियों को लगा जैसे ग्रामीण जन भगवान भरोसे जी रहे है। समुद्र के नमक के पानी और जमीन पर उपलब्ध खारे पानी ने खेती को सर्वाधिक प्रभावित किया है। साथ ही इन मछुआरों को बड़े उद्योगपतियों से भी संघर्ष करना पड़ता है क्योंकि जिस पानी से ये मछली पकड़ते हैं उस पर इन उद्योगपतियों का कब्जा है।

जल ही जीवन है। परन्तु जो लोग पानी से पेट पालते है उनके लिए यह प्राणवायु है। नाना अम्बाला से बालाचढ़ी तक गुजरात के समुद्र तट को नजदीक से जानने-सीखने का यह अनुभव चालीस शोधयात्रियों के लिए अविस्मरणीय व अतुलनीय अनुभव रहा। समुद्र, जहां प्रकृति और मनुष्य के बीच एक सीमारेखा है : पानी। यहां के मछुआरों, नमक निकालने वाले लोगों, किसानों और जन साधारण के लिए पानी, पानी नहीं भगवान है सभी चाहते हैं कि उन पर इस भगवान की कृपा बनी रहे। यहां के स्थानीय समुदायों के पास गहरा परम्परागत ज्ञान है और इतनी ही गहरी है यहां की स्थानीय समस्याएं। इस दृष्टि से यह तेरहवीं शोधयात्रा बहुत कारगर थी। स्थानीय समुदायों के ज्ञानी जनों से शोधयात्रियों ने बहुत कुछ सीखा। इन ज्ञानी जनों के कारण ही हमारा समृद्ध भूतकाल अब तक संरक्षित है और ये लोग वर्तमान का हाल भी भली भांति जानते हैं।

जाल के साथ समुद्र से लौटते मछुआरें

तटवर्ती वनस्पति और जल-जीव

नरारा द्वीप की अद्भुत वनस्पति और जल जीवजन्तु देखना शोधयात्रियों के लिए अतुलनीय अनुभव था। यह द्वीप समुद्री वनस्पतियों तथा समुद्री जीवन की विविधता के लिए बेहद प्रसिद्ध है। फूल जैसे दिखने वाले विशाल समुद्री जीव *(Stichodactyla gigantea)* को देखकर तो जैसे सभी ने दांतो तले अंगुली दबा ली। हरे रंग के इस विशाल जन्तु को यहां की क्षेत्रीय भाषा में समुद्री फूल ही कहते है। यह हरा फूल जैसा जीव छूने पर सिकुड़ जाता है और पानी में अन्दर गहरे चला जाता है।

शोधयात्रियों को विभिन्न रंगों में चमकदार मूंगे भी देखने को मिले। यद्यपि अब प्रदूषण की मार के कारण ऑक्टोपस तथा मूंगो की संख्या बहुत कम होने लगी है। मरे हुए मूंगे जो कुछ राख जैसे रंग के थे, बहुत अधिक नज़र आ रहे थे।

एक अच्छी बात यह देखने को मिली, कि चेर जो कुछ समय पहले तक बहुतायत में होता था, फ़िर से उगने लगा था। यहां के वन्य अधिकारी श्री एम. एन. जोशी ने जंगल बचाने की अपनी योजना के बारे में बताया। इसके तहत गमलों में चेर के बीज बोये गए। गुला (एक स्थानीय जानवर है जो मिट्टी में सुरंग बनाता है) द्वारा खोदी गई मिट्टी को गमलों में भरा जाता है। इन गमलों को समुद्र के किनारे

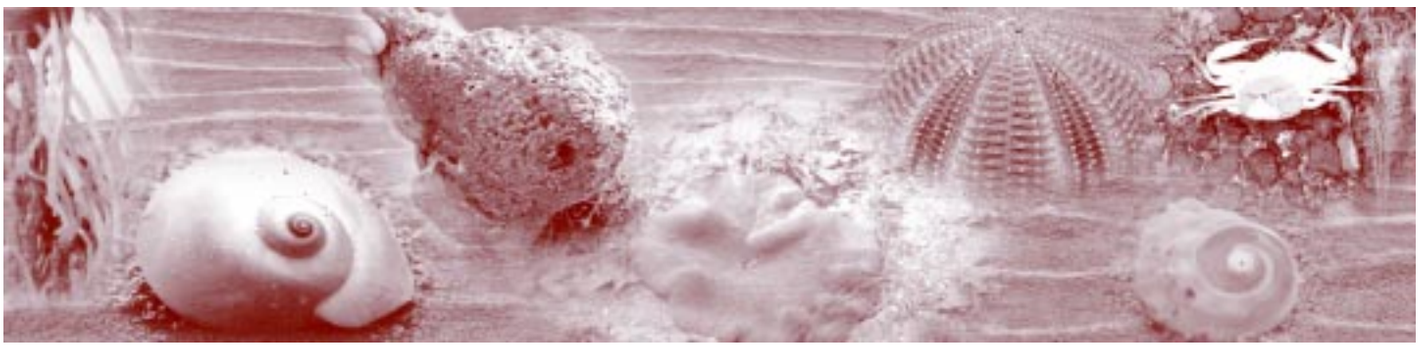

१. यह लेख सृष्टि को दी गयी जानकारी पर आधारित है। शोधयात्रा की सम्पूर्ण जानकारी *www.sristi.org.* पर उपलब्ध है। हम श्री वी.जे.ठक्कर, डिप्टी डायरेक्टर, मत्स्य विभाग (गुजरात सरकार), अहमदाबाद और GEER Foundation, गांधीनगर के आभारी है, जिन्होंने हमें इस लेख हेतु मछलियों और अन्य जानवरों के वैज्ञानिक नाम उपलब्ध करवाये।

रखते है जहां ये लहरों की पहुंच में रहते हैं। समुद्र का खारा पानी चेर के लिए अच्छा होता है। जैसे-जैसे पौधा बड़ा होता जाता है, इसकी जड़े गमले को तोड़ देती है। पौधा धीरे-धीरे बड़ा होता जाता है। तीन साल पहले भी यही विधि अपनायी गई थी तथा काफ़ी सफ़ल भी हुई थी।

यहां हमने फ़ोकर मछली भी देखी। इसे स्थानीय भाषा में फ़ाको अथवा ढोंगी कहते हैं इसके दांत जहरीले होते हैं। चीन और जापान में इस मछली से स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं।

साचना गांव से गुजरते हुए हमने गुलाबी हंसावरो का आकाश मे उड़ता हुआ झुण्ड देखा। पूरा नीला आकाश गुलाबी हंसो से भरा हुआ बेहद खूबसूरत लग रहा था। खिज़ाड़ियां गांव का प्रसिद्ध पक्षी विहार देखकर निराशा हुई। यह पक्षी विहार धुमन्तू पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है परन्तु ये पक्षी केवल सर्दी में ही आते हैं।

धरती का खारा- नमक

समुद्र के पानी से नमक निकालने की छोटी-छोटी इकाईयां यहां बहुत अधिक है। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ऐसे बांध मिल जाएंगे जहां समुद्र के पानी को रोक लिया जाता है तथा नमक निकाला जाता है। समुद्र के किनारे नमक की ढ़ेरियां दिखना कोई नई बात नहीं है। बहुत से स्थानों पर पम्प द्वारा गहरा पानी निकाला जाता है। यह पानी अपेक्षाकृत खारा होता है, ज़ाहिर है इसमें नमक भी ज्यादा होता है। यही कारण है कि अब इस क्षेत्र का पीने का पानी भी खारा होता जा रहा है।

यादगार पल

स्थानीय समुदायों के स्वागत सत्कार और जोश ने शोधयात्रियों का मन मोह लिया। बेड़ गांव के लोगों ने

बेड़ गांव में शोधयात्रा का स्वागत करती बालिकाएं

तो ढोल, नगाड़े और शहनाई बजाकर शोधयात्रियों का स्वागत किया। परम्परागत वस्त्रों में सजी छोटी-छोटी बच्चियों के साथ शोधयात्रियों ने गांव में प्रवेश किया।

ज्ञान का आदान प्रदान

श्री इस्माइल भाई इब्राहिम भाई गजन नाना अम्बाला गांव के रहने वाले हैं। सौ वर्ष से भी अधिक की उम्र के इस्माइल भाई पशुवैद्य है। उनका दर्द साफ दिखता है जब ये कहते हैं कि उनके देखते-देखते कितने पेड़ पौधे लुप्त हो गए। इस कारण दवा बनाने तथा इलाज पर भी बुरा असर पड़ा है। अपने ज्ञान को अन्य लोगों के साथ बांटने में इस्माइल भाई को बेहद खुशी होती है, वे कहते हैं कि इस रुप में ज्ञान का प्रचार करके वे ज्ञान का संरक्षण ही कर रहे हैं।

सरमत गांव में हमारी मुलाकात हीराभाई मूलजीभाई भाम्भी से हुई। हीराभाई भी पशुवैद्य है। उन्होंने यह सब एक राजपूत से सीखा जबकि वे स्वयं अनुसूचित जाति के हैं। यह

एक बहुत बड़ी बात है कि राजपूत जैसी ऊंची जाति के किसी व्यक्ति ने निम्न जाति के हीराभाई को अपना सारा ज्ञान सिखाया।

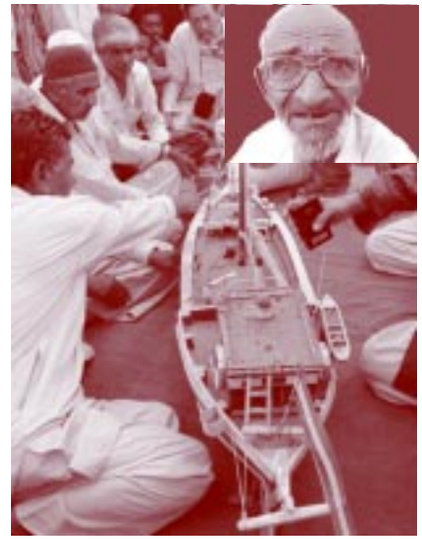

अहमदभाई गंधार (इनसेट), साथ है इनकी बनायी नाव का नमूना

सिक्का गांव में मत्स्य पालन से सम्बन्धित जानकारी मिली। अब्बास भाई महमूद भाई ने बताया कि सागौन *(Tectona grandis)* तथा बबूल *(Acacia nilotica)* की लकड़ी से नाव बनायी जाती है। सिया मछली का तेल नाव पर लगाने से नाव की लकड़ी मजबूत होती है। इसी गांव में मिले अहमदभाई गन्धार, जो नावों के नमूने बनाते है। ये काम वे शौकिया तौर पर करते हैं। ऐसी ही एक नाव का नमूना उन्होंने शोधयात्रियों को भी दिखाया। इस गांव के मछुआरों ने बताया कि प्रदूषण के कारण मछलियां मर रही है और मछुआरों को भी भारी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इसी तरह की बहुत सी समस्याएं आस-पास के अन्य गांवो में भी देखने को मिली। (देखें पेज ११)

रसूलपूरा गांव के मछुआरों ने मछलियों की स्थानीय प्रजातियों के बारे में बताया। इनमें दांतिया अथवा दंतारो *(Psettodeserumei)* कुंगा, *(Scombridae erumei)* फ़ाला, भार तथा चचरानी प्रमुख है। इनमें भी फ़ाला, भार तथा चचरानी अब लुप्तप्राय : है।

नवा नगना गांव में किसानों ने बताया कि नील गाय उनके खेतों को अकसर चर जाती है, उन्होंने शोधयात्रियों से इसका उपाय पूछा। रमेश पटेल ने कहा कि नील गाय का गोबर खेत के चारों तरफ फैला देने से नील गाय खेत में नही आएगी। साथ ही खट्टी छाछ से भरे घड़े-खेत में इधर उधर रख देने से भी नील गाय खेत से दूर रहेगी। उत्तरी गुजरात के लोकसरवाणी के पाठको ने ये दोंनो विधियां बतायी थी।

ज्ञान को प्रणाम

सिक्का गांव में एक परिवार के तीन शतायु व्यक्तियों से मिलने का सौभाग्य मिला। यह पहली बार हुआ जब शोधयात्रियों की मुलाकात एक ही परिवार के तीन सदस्यों से हुई जिनकी उम्र सौ वर्ष से

अयूबभाई, पत्नी आयशा तथा बहन अलिमा के साथ, एक परिवार के शतायु उम्र के सदस्य

अधिक थी। अयूब भाई हुसैन कुंगदा ११७ वर्ष के है। उनकी पत्नी हाजियानी आयेशा अयूब कुंगदा १०२ वर्षीय है अयूब भाई की बहन अलिमा अयूब भाई कक्कर १०७ वर्ष की है। अयूब भाई मछली पकड़ने का काम करते थे। कोयले का धन्धा भी करते थे। हमने अयूब भाई, उनकी पत्नी तथा बहन का सम्मान किया। अयूब भाई ने बताया कि वे गधरी व अम्रूस मछलियों का शिकार करते थे। मछलियां २० से ३० किलो भार की हुआ करती थी। दुर्भाग्य से ये मछलियां अब लुप्त हो चुकी है। तीस साल पहले अयूब भाई ने मछली पालन बन्द कर दिया था। उनका बेटा सरकारी नौकरी करता है तथा परिवार का कोई भी व्यक्ति अब मछली नहीं पकड़ता।

सिंगच गांव में हमने सौ वर्ष की पशु वैद्य देवी बहन भीमाभाई लकुम को सम्मानित किया। देवी बहन ने पशु रोगों के बारे में बात की। बेदी गांव में शोधयात्रियों को पांच शतायु जनों से मिलने का सौभाग्य मिला।

स्थानीय नवसृजनों की खोज

नगवा गांव में हमने तीन किसानों द्वारा तैयार की गई गेहूं की नई प्रजाति देखी। पुतारिया नामक गेहूं की यह प्रजाति काली कठोर मिट्टी में भी उगायी जा सकती है। इस प्रजाति का दाना अपेक्षाकृत तीखा है। इसमें पोषक तत्व भी अधिक है। यहां के किसानों का कहना था कि इस प्रजाति के गेहूँ के दानों को भूसे के साथ रखा जाए तो कीड़े नहीं लगते। लेकिन दाने से भूसे को अलग करना बेहद टेड़ा काम है, यही कारण है कि यह प्रजाति अधिक लोकप्रिय नहीं है।

नवा नगना गांव में हम पुरुषोत्तम भाई लालजी भाई से मिले। पुरुषोत्तम भाई ने बिजली फ़िटिंग में काम आने वाली पिन बनाने की मशीन बनायी है। इस मशीन से एक दिन में ६००-७०० ग्रॉस पिन बनायी जा सकती है (१ ग्रास = १४ पिन)। एक अकेला आदमी भी आराम से मशीन चला सकता है। वे अब तक ऐसी २५ मशीनें बेच चुके हैं, एक मशीन की कीमत है १४,०००रुपये। लगभग पंद्रह वर्ष पहले

पुरुषोत्तम भाई (इनसेट में) तथा उनकी पिन बनाने की मशीन

अपूर्ण वर्तमान

सिक्का गांव के मत्स्यपालक अब्दुल कासम नेपानी रोषपूर्ण स्वर में अपनी बात कहते हुए।

मछुआरों को अपने जीवन-निर्वाह के लिए अनेको समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुछ समस्यायें प्रकृति जन्य होती है जबकि कुछ समस्याएं मनुष्यों द्वारा ही खड़ी की गई होती है।

इस क्षेत्र में बड़े बड़े कारखाने हैं। बहुत बार ये लोग मछुआरों के जाल फाड़ डालते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि जाल कारखाने के अधिकार क्षेत्र में डाला गया है। ये उद्योगपति छोटे मछुआरों के लिए समस्याएं तो खड़ी कर देते है परन्तु इसका विकल्प नहीं सुझाते। अधिकांश गांवो में रोज़गार एक मुख्य समस्या है।

- मछलियों की तादाद में भारी कमी आ रही है। मछलियों की कई प्रजातियां भी लुप्त हो रही है। बढ़ता हुआ जल-प्रदूषण इसका एकमात्र कारण है।
- कभी-कभी तेज हवा के कारण मछुआरे पाकिस्तान की सीमा में पहुंच जाते हैं। इन मछुआरों का कहना है कि भारत तथा पाक सरकार को इस तरह के केस सहानुभूति पूर्ण तरीके से सुलझाने चाहिए।
- सरकार किसानों को सस्ते ब्याज पर ऋण देती है, सब्सिडी भी देती है, परन्तु मत्स्य पालकों को ऐसी कोई सुविधा नहीं दी जाती है।
- पिरोटन (मछुआरों का तीर्थ स्थान) की यात्रा करने के लिए मछुआरों को शुल्क देना पड़ता है, इसमें छूट मिलनी चाहिए।
- एक बार समुद्र में जाने के बाद शेष दुनिया से मछुआरों का कोई सम्पर्क नही रहता, मोबाइल फ़ोन के प्रयोग पर प्रतिबन्ध है।
- समुद्र के खारे पानी के कारण पीने का पानी भी खारा हो गया है। गहरी खुदाई के कारण खारा पानी कुओं में आ गया है और अब पीने का पानी बहुत बड़ी समस्या बन गया है।
- खारे पानी के कारण मिट्टी की उर्वरता नष्ट हो रही है तथा उत्पादन में भारी कमी आ रही है।
- नमक का काम करने वाले मजदूरों के शरीर पर फ़ोडे-फुन्सियाँ तथा अल्सर हो जाता है। ये लोग त्वचा व हृदय रोगों से भी पीड़ित होते है।
- नमक की ढ़ेरियों पर पड़ने वाली सूर्य की चमक का आंखो पर बुरा असर पड़ता है, नमक का काम करने वाले ये लोग अन्धे भी हो जाते हैं।

उन्होंने यह मशीन बनायी थी। श्री पुरुषोत्तम भाई को अब तक पेटेन्ट की कोई जानकारी नहीं थी तथा अनेको लोग इस मशीन की नकल से दूसरी मशीन बना चुके है। नतीजा यह है कि पिन का उत्पादन बढ़ने से दाम कम हुए और पुरुषोत्तम भाई की आर्थिक स्थिति जस की तस बनी रही।

सरमत गांव के अलीभाई आभवानी ने मिर्च की स्वविकसित प्रजाति 'रेशम पट्टी' दिखाई। वर्ष २००२ में आयोजित NIF की दूसरी प्रतियोगिता में इस प्रजाति को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया था।

उम्मीद भविष्य से

बेड़ गांव के नवीं कक्षा के विद्यार्थी किशोर भाई गोरधन भाई सोनगरा ने १९० पौधों के नाम बताये। जैवविविधता प्रतियोगिता में सोनगरा को पहला पुरस्कार दिया गया।

इस शोधयात्रा के दौरान विभिन्न गांवो में आयोजित जैव विविधता प्रतियोगिता में कुल ११०० बच्चों ने भाग लिया। कुल ३४ बच्चों को पुरस्कृत किया गया जिनमें १६ लड़कियां भी शामिल है।

बेड़ गांव की सरपंच अमीना बेन चामरिया दबंग और सुलझी हुई महिला है। उन्हें विश्वास था कि शोधयात्रियों को उनके गांव से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

यात्रा का समापनः नवीनता की शुरुआत

हर शोधयात्रा का आखिरी चरण बहुत सी नई चीज़ों की तरफ बढ़ा पहला कदम होता है। बाहरी यात्रा खत्म होती है और

शेष पृष्ठ १८ पर

समाचार-विचार

जैविक खाद्य की खरीद-फ़रोख्त

परख-नाम है किसानों की संस्था का जिसने ११ जून, २००४ को जैविक खाद्य पदार्थों की अपनी दुकान का शुभारम्भ किया। दिसम्बर २००३ में सृष्टि के सहयोग से स्थापित इस संस्था का उद्देश्य बाज़ार में जैविक खाद्य की लोकप्रियता बढ़ाना है। परख- इस बात का भी ख्याल रखती है कि किसानों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य मिले। परख (PARAKH) पीपल्स एक्शन फॉर रिसर्च एण्ड असिस्टेन्स टू नॉलेज होल्र्डस।

समाज के रक्षकों के हित में

वर्ल्ड इन्टेलैक्चुअल प्रोपर्टी ऑर्गेनाइज़ेशन (WIPO) तथा युनाइटेड नेशन्स एनवायरमेन्ट प्रोग्राम (UNEP) साझेदारी में प्रो. अनिल गुप्ता ने एक अध्ययन किया। इस विश्लेषणात्मक अध्ययन में माली, नाइजीरिया तथा भारत को अध्ययन क्षेत्र के रुप में चुना गया है। "रिवार्डिग कन्जर्वेशन ऑफ बॉयोलॉजिकल एण्ड जेनेटिकल रिसोर्सेज एण्ड एसोसियेटेड ट्रेडिशनल नॉलेज एण्ड कन्टेम्परेरी ग्रासरुट्स क्रिएटिविटी", यह इस अध्ययन का विषय है।

(विस्तृत जानकारी के लिए देखें - http://www.unep.org/Documents. Multilingual/Default.asp, दस्तावेज - ID- 383, आलेख- ID- 4356&l=en, http://sristi.org/pub.html)

संभावनाओं की तलाश

बिर्क बॉब (Birch Bob) नामक अमेरीकी संस्था एक इंटरनेट सर्च इंजन पर काम करती है तथा दुनिया भर की उन तकनीक की तलाश करती है जिन्हें पेटेन्ट नही मिला है। यह संस्था स्थानीय नवसृजकों के लिए विशेष डेटाबेस बनाना चाहती है तथा इस हेतु इसने हनी बी नेटवर्क से सम्पर्क भी स्थापित किया है। हनी बी नेटवर्क इस प्रस्ताव का अध्ययन कर रहा है। इस तरह हम अपने देश के स्थानीय नवसृजनों के लिए विदेशी बाज़ार ढूंढ पायेंगें। इस साझेदारी पर अभी विस्तृत बातचीत की जा रही है।

सूक्ष्म निवेश सहायता कोष

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान द्वारा स्थापित सूक्ष्म निवेश नवसर्जन सहायता कोष सिड़बी (SIDBI) की मदद से छोटे नवसृजनों तथा नवसृजन आधारित उद्यमों को आर्थिक सहायता देता है। आमतौर पर कोई भी निवेशक छोटे उद्योगों को प्राथमिकता नहीं देता। सूक्ष्म जोखिम निवेश नवसर्जन कोष किसी भी नवसृजन के तकनीकी विकास के सभी पहलुओं का ध्यान रखता है, जैसे प्रारुप का विकास, बौद्धिक सम्पत्ति अधिकारों की सुरक्षा आदि।

सूक्ष्म निवेश कोष की स्थापना की बात सर्वप्रथम तत्कालीन वित्त मंत्री २००२ के अपने बजट भाषण में कही। फ़लस्वरुप पांच करोड़ की धनराशि के साथ दस वर्षो के लिए सूक्ष्म निवेश कोष की स्थापना की गई। कृषि, इंजीनियरिंग, पशु विज्ञान, वन्यजीवन परिवहन, स्वास्थ्य पद्धतियों, ऊर्जा संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन, नवसृजन, कला तथा उत्कृष्ट विचारों के लिए सूक्ष्म जोखिम निवेश नवसर्जन कोष धनराशि उपलब्ध करवाता है।

आर्थिक सहायता हेतु जिस पद्धति के लिए आवेदन किया जाता है उसे किसी संस्था की सहायता नहीं मिली हो, वह स्थानीय तकनीक पर आधारित हो तथा जिसकी व्यवसायिक पृष्ठभूमि न हो।

चयन के लिए तय मापदण्ड

पद्धति व्यवहारिक हो तथा सस्ती हो। पद्धति अपने प्रतिरुप, कार्यपद्धति में विशिष्ट हो। उसमें व्यवसायिकता के लक्षण हो। उस पद्धति को प्राथमिकता दी जाएगी। जो समाज के छोटे तबके से आयी हो तथा श्रेष्ठ हो। NIF की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पुरस्कृत नवसृजनों को भी प्राथमिकता दी जाएगी।

(अधिक जानकारी के लिए देखें- http://www.nifindia.org/mvif.htm)

நம்வழி வேளாண்மை

नम वालि वेलनमायी
(हनी बी का तमिल संस्करण)
पी. विवेकानन्दन, सम्पादक, सेवा, ४५, TPM नगर
विराट्टीपट्टू, मदूरै- ६२५०१०, तमिलनाडु
ई.मेल- numvali@vsnl.com

कपड़ों को कीड़ों से बचाना

पचास ग्राम करुन्जीरगम *(Nigella sativa)*, पचास ग्राम वासम्बु *(Acorus calamus)*, कपूर *(Cinnamomum camphora)*, पचास ग्राम कस्तूरीमंजल *(Curcuma aromatica)*, पूलनकिलांगु तथा मरुआ *(Ocimum basilicum)* की पचास-पचास ग्राम मात्रा को पीसकर पाउडर बना लिया जाता है।

इस पाउडर को सूती कपड़े में बांधकर अलमारी में टांग देने से कीड़े कपड़ो से दूर रहते है। इसी पाउडर को बादाम तेल के साथ मिलाकर लगाने से यह ब्लीच का कार्य करता है।

(करुन्जीरगम (Nigella sativa)मूलतः कीटनाशक है। वासम्बू (Acorus calamus) के सूखे पत्ते भी कीटनाशक के रुप में प्रयुक्त होते हैं, स्रोत :- मोटले टी. जे. (१९९४), द एथनोबॉटेनी ऑफ स्वीट फ्लेग, एकॉन बॉट (४८) ४: ३९७-४१२- एकोरस केलेमस की सूखी पत्तियों से अनाज में कीड़े नहीं पड़ते, स्रोत :- एन. सी. शाह तथा एस. के जैन (१९८८), एथनो मेडिको बोटनी ऑफ द कुमाऊं हिमालय इण्डिया, NAPDB)*

नवसृजक- वृथराज अय्यर, पो. पवलप्पुर, जिला- त्रिच्ची

जैविक कीटनाशक बनाने की विधि

श्री एम. अरसप्पन, चावल, रुई और सब्जियों के लिए जैविक कीटनाशक बनाते हैं।

एक किलो तम्बाकू का तना, ५०० ग्राम नित्यकल्याणी *(Vinca rosea)* की पत्तियां, ५०० ग्राम गाजरघास *(Parthenium hysterophorus)* की पत्तियां, ५०० ग्राम थुन्बई *(Leucas aspera)* तथा २५० ग्राम अड्डथिन्ना पिल्ली *(Aristolochia indica)* की पत्तियों को एक मिट्टी के बर्तन में रखकर उसमें दस लीटर पानी डालकर, मिट्टी में गाड़ देते है। पंद्रह दिन तक इसे ऐसे ही पड़े रहने देते हैं, बस एक बार अच्छी तरह हिला

जैविक समाधान

लेते हैं। पंद्रह दिन बाद इस मिश्रण की एक लीटर मात्रा को २५० मिली गौमूत्र तथा एक लीटर पानी में मिलाते हैं। शाम के समय इस कीटनाशक का पौधों पर छिड़काव किया जाता है।

श्री अरसप्पन तम्बाकू और गौमूत्र के प्रयोग से एक अन्य कीटनाशक बनाते है। इसमें चार किलो तम्बाकू की पत्तियों को पांच लीटर पानी में आधे घण्टे तक उबाला जाता है। इस मिश्रण में पंद्रह लीटर गौमूत्र तथा ४० लीटर पानी मिलाया जाता है। इस घोल से एफ़िड, थ्रिफ तथा पत्तियों का मरोड़िया रोग ठीक होता है। *(Vinca rosea, Vitex negundo से कपास में सफेद मक्खी के प्रकोप पर नियन्त्रण रहता है। ट्रोपिकल एण्ड सबट्रोपिकल एग्रोसिस्टम, २ (२००३), (http://www.uady.mx/sitios/veterina/servicios/journal/amaugo2003.pdf).*

नवसृजक- श्री एम. अरसप्पन, करनमपट्टी, वाड़ासेरी, पो. थोकामलायी, जिला- करुर

पेट के कीड़ों के लिए

गुमामाधुपति अर्थात्- पेरुन्थुम्बाई *(Leucas aspera)* की १०० ग्राम पत्तियों

को पीसकर २०० मिली बिनौले के तेल में मिलाकर जानवर को पिलाया जाता है। इससे पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। (छत्तीसगढ़ के लोग थुन्बई *(Leucas aspera)*, जिसे स्थानीय भाषा में गुमा माजी कहते हैं, कि पत्तियों का प्रयोग पेट के कीड़े निकालने में करते हैं)। *(http://www.botanical.com/site/columm_poudhia/75_sahadevi.html)*

*NAPDB- NAPRALERT डाटाबेस युनिवर्सिटी ऑफ इलिनॉइस, अमरीका

दर्द निवारक दवा

स्टेडिमॉन अराकल अण्डमान निकोबार के निवासी हैं। उनका परिवार कल्लरी मर्म चिकित्सा में माहिर है। यह कल्लरीपयट्टु (केरल की युद्ध कौशल कला) का ही दूसरा रुप है, इसमें शरीर के संवेदनशील भागों को दबा कर रोगों का इलाज किया जाता है। स्टेडिमॉन ने एक विशेष तेल विकसित किया है जो जोड़ों के दर्द, सूजन, आर्थराइटिस आदि में असरकारी है।

यह तेल बनाने के लिए अडूसा (*Adhatoda vasica*) की पत्तियां, ग्वारपाठा (*Aloe vera)* की छाल, सोवा *(Anethum sowa)* के बीज, आंक (*Calotropis gigantea*) की पत्तियां, कपूर, दूधी *(Euphorbia hirta)*, मंदारा *(Erythrina indica)* की पत्तियां, आंवला (*Emblica officinalis*), इमली (*Tamarindus indica*), मेथी (*Trigonella foenum-graecum*), बहेडा (*Terminalia bellerica*), अरंडी (*Ricinus communis*) तथा सहजन (*Moringa oleifera*) की पत्तियां तथा तिल *(Sesamum indicum)* के तेल का प्रयोग किया जाता है।

सभी तरह की पत्तियों, बीजों तथा छाल की ४०० ग्राम (प्रत्येक) मात्रा को पीसकर एक लीटर पानी में मिलाकर पेस्ट बनाया जाता है। इसमें एक लीटर तिल का तेल भी डालते हैं, बस दवा तैयार है।

खिंचाव, सूजन आदि के इलाज के लिए इस तेल को हलका गुनगुना करके, इसकी मालिश की जाती है। लगभग एक घण्टे बाद शरीर के जिस भाग पर तेल लगाया हो उसे गर्म-नमक मिले पानी से धो लिया जाता है। लगातार तीन दिन यह प्रक्रिया दोहराने से दर्द से राहत मिलती है।

स्रोत- स्टेडिमॉन अराकल पॉल (NIF डेटाबेस से) पोर्ट ब्लेयर, अण्डमान - निकोबार दीप समूह

विश्वस्त कवच

सृष्टि ज्ञान केन्द्र
कमलजीत मिगलानी
नागला, पंतनगर, उधमसिंह नगर
उत्तरांचल
ई.मेल- kamalvijay2@rediffmail.com

(विभिन्न सामाजिक संगठनों तथा लोगों के साथ बातचीत से कमलजीत ने यह जानकारी जुटायी।)

लाखा पर नियन्त्रण

पाइरिला लाखा *(Pyrilla perpusilla)* से गन्ने की फ़सल को काफ़ी खतरा रहता है। इस लाखा से 'गालो' रोग होता है जिसमें सर्दी के दिनों में तने तथा पत्तों पर शहद जैसा चिपचिपा पदार्थ जमने लगता है।
स्थानीय किसान जीवन सिंह बिष्ट ने देखा कि यह लाखा चारे की उसी फ़सल पर जाता है जो गन्ने के आस-पास लगायी गयी है। प्रयोग के तौर पर श्री बिष्ट ने गन्ने के फ़सल के चारों तरफ चारा उगा दिया, प्रयोग सफ़ल रहा और आशा के अनुसार ७० से ८० प्रतिशत तक गन्ने की फ़सल को लाखा के प्रकोप से बचा लिया गया।

(पाइरिला से गन्ने की फ़सल को सर्वाधिक हानि होती है। गन्ने की फ़सल पर अधिक जानकारी के लिए देखें :- http://karnal.nic.in/res_sbirc.asp)

नवसृजक- जीवनसिंह बिष्ट
गांव- चौमालिया नाथुपुर, जिला- नैनीताल

बिच्छू बूटी से डरते हैं चूहे

शिवदत्त पाठक ने खेत में चूहों का प्रवेश निषेध करने का नायाब तरीका खोजा है। उन्होंने अपने खेत में जगह-जगह बिच्छू बूटी (*Urtica dioica*) छोड़ दी। बिच्छू बूटी के कांटो से बिच्छू के डंक का आभास होता है और चूहे खेत से दूर रहने लगे।
(बिच्छू बूटी के सम्पर्क में आने पर जानवर के शरीर में खुजली हो जाती है। यदि जानवर इसे खा ले तो शरीर पर दाने निकल आएंगे।)

नवसृजक- शिवदत्त पाठक
गांव- हल्दुघर, जिला- उधमसिंह नगर

खुर-मुंह के रोग का इलाज

खुर-मुंह का रोग पशुओं का सर्वाधिक होने वाला रोग है। शान्तिपुरी भगतपुर के अब्दुल वाहिद चिचिण्डा नलजी, धुन्दुली, पन्डा, (*Trichosanthes cucumerina*) के छोटे-छोटे टुकड़े कर के मिश्रण बनाते हैं। इस मिश्रण को पानी में मिलाकर जानवर को सुबह-शाम तीन दिन तक देने से खुर-मुंह के इलाज में लाभ मिलता है।

(चिचिण्डा में कृमिनाशक, वामक और शोधक गुण होते हैं। *http://www. scs. leeds. ac.uk/ cgi-bin/pfafa/arr_html)*

नवसृजक - अब्दुल वाहिद
शान्तिपुरी भगतपुर बांध
जिला- उधमसिंह नगर

पेट में कीड़ों का इलाज

जानवरों में पेट के कीड़े होने पर यदि तुरन्त इलाज न किया जाये तो काफ़ी खतरनाक हो सकता है। विजयकुमार के अनुसार चार-पांच तुरई (*Luffa acutangula*) को पीसकर घाव पर लगाकर पट्टी से बांध दिया जाता है। हर तीसरे दिन पट्टी बदलते हैं।

(तुरई की पत्तियों से त्वचा के रोगों का इलाज किया जाता है। इसके बीजों में वामक तथा शोधक गुण होते हैं। *http:// www.rbgkew. org.uk/sheets/ gourds.html)*

नवसृजक- विजय कुमार
गांव- पूर्वी राजीव नगर, बिन्दूखट्टा,
जिला- नैनीताल

रोग निवारक

जानवरों के घावों पर कई बार कीड़े लग जाते हैं। उधमसिंह नगर के अनीराम नाशपती (*Prunus persica*) की पत्तियों को पीसकर उसका लेप बनाते हैं। इस लेप को घाव पर लगाकर कपड़े से बांध देते हैं। कीड़ों के मर जाने तक यह प्रक्रिया दोहराते है।

यदि जानवर के पेट में भी कीड़े हैं तो जानवर को नाशपती के पत्ते उबालकर उसका पानी पिलाने से आराम मिलता है।

(नाशपती की छाल और पत्तों में कृमिनाशक, वामक, शोधक व रेचक गुण होते है। पशुवैद्य मानते हैं कि नाशपती की ताजा पत्तियों में कीड़ों को बाहर निकालने की क्षमता होती है। (http://www.botanical.com/botanical/mgmh/p/peach-17.html)

तुर्की में इसकी पत्तियों के प्रयोग से रक्तस्राव रोका जाता है।

स्रोत :- येसिलेडा ई, होण्डा जी (१९९५) ट्रेडिशनल मेडिसिन इन टर्की, जे एथनोफ़ार्माकोल ४६(३) :१३३-१५२ NAPDB)

नवसृजक- अनीराम
गांव- बिन्दुखट्टा, तिवारी नगर, जिला- उधमसिंह नगर

हितकारी सरसों

अमा अखा पखा
हनी बी का उड़िया संस्करण
डॉ. बलराम साहू, सम्पादक
३- R- B-P-5/2, बी.पी. कॉलोनी, यूनिट- ८,
भुवनेश्वर- ७५१०१२, उड़ीसा
ई-मेल- balaram_sahu@hotmail.com

संक्रमणकारी एण्था का इलाज

बकरियां इस रोग की सर्वाधिक शिकार होती हैं। इसमें आंख और होठों के पास छोटी-छोटी फुंसियां निकल आती है।

कोंढमाल गांव के निवासी कच्ची सरसों के दानों को पीसकर फुंसियों पर लगाते हैं। तीन-चार बार लगने से फुंसियां ठीक हो जाती है।

दुर्योधन बिस्वाल पशुवैद्य हैं और इस पद्धति का काफ़ी समय से प्रयोग भी कर रहे हैं।

(ग्वाटेमाला में सरसों के दानों से त्वचा के रोगों तथा शरीर दर्द का इलाज किया जाता है। कोमफॉर्ड एन. सी. (१९९६), मेडिसीनल प्लान्ट्स फ्रॉम टू म्यान हील्स इन सेन एन्डेस पीटन, ग्वाटेमाला। एकोन बोट ५०(३) :३२७-३३६: NAPDB)

जानवर की पूंछ के नासूर का इलाज

कभी-कभी जानवरों की पूंछ का संक्रमण बढ़ते-बढ़ते

नासूर का रुप ले लेता है। सरसों के बीजों को पीसकर पूंछ पर लेपने से आराम मिलता है। इसके लिए सरसों के दानों को पीसकर दो-तीन दिन के लिए छोड़ देते हैं ताकि उनमें खमीर पैदा हो जाए। यह हवा दिन में एक बार लगातार सात दिन तक लगाने से नासूर ठीक होता है।

यह जानकारी अंगुल जिले के गांव इति से कालीचरण साहू ने दी।

(त्वचा के संक्रमण में सरसों के बीज बहुत हितकारी है। सीताराम के. एस. पसरीचा (१९८७), कण्डिमेन्टस एण्ड कॉनटेक्ट डर्मिटाइटिस ऑफ दि फ़िगर टिप्स, बहुत से फंगल और जीवाणुकारी संक्रमणों के इलाज के लिए सरसों के तेल का प्रयोग किया जाता है।)

भू जल का पता लगाने की स्थानीय विधि

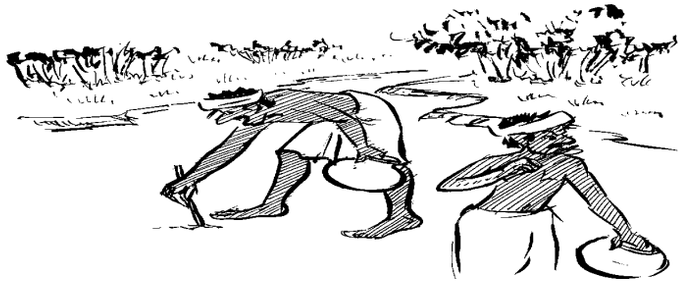

पश्चिमी और उत्तरी उड़ीसा की केला जनजाति मूलत : कुएं खोदती है। यह जनजाति विशेष प्रकार की लोहे की छड़ी से वहां के पानी के स्वाद पता लगाती

है। छड़ी को डेढ़ - दो फ़ीट तक जमीन में धंसाया जाता है। फिर इसे निकालकर इस पर लगी मिट्टी को चखा जाता है। यदि मिट्टी का स्वाद नमकीन है तो नीचे मीठा पानी होगा अन्यथा नहीं। इसी के आधार पर तय किया जाता है कि कहां कुआं खोदना है और कहां नहीं। इस पर प्रयोग की आवश्यकता है।

> सरसों हर जगह पायी जाती है। सरसों का तेल शुद्धिकरण के काम आता है। (स्रोत :- शाह जी. एल. गोपाल जी वी १९८५, एथनोमेडिकल नोट्स फ्रॉम द ट्राइबल इनहेबिटेन्ट्स ऑफ नोर्थ गुजरात। जे एकॉन टेक्सॉन बोटेनी ६(१) : १९३-२०१ : सरसों के प्रयोग से मुंह के छाले तथा पशुओं के पेट के कीड़ों का इलाज किया जाता है। (हनी बी डेटाबेस)

(इस तरह की पद्धतियों के बारे में कई तरह के विचार प्रचलित है। जर्मनी में भी इसी तरह की पद्धति जर्मनी में भी प्रचलित है। (www.healthyandwise.co.uk/dowsing_site.htm)

परिसर्प तथा अन्य त्वचा रोगों का इलाज

बछड़ों में विशेषकर होने वाला यह त्वचा रोग स्थानीय भाषा में अलाति कहलाता है। अंगुल जिले के पलाहारी क्षेत्र के अस्सी वर्षीय किसान कालीचरण साहू जाने माने पशु वैद्य है। वे अलाति के इलाज के लिए *Woodfordia floribunda* नामक पौधे के फूलों को सुखाकर उनका चूर्ण बनाकर रोग ग्रस्त भाग पर लगाते है। छः सात दिन के प्रयोग से त्वचा का रोग ठीक होने लगता है।

(Woodfordia floribunda द्वारा अलाति के इलाज के विषय में अधिक जानकारी के लिए देखें- www. holistic-online.com/Herbal-Med/_Herbs/h143.html)

अलाति के पत्तों से त्वचा के रोग, शरीर की सूजन, फोड़े-फुंसी आदि का इलाज किया जाता है, तिवारी वी. जे., पाधे एम. डी. (१९९३), 'एथनोबोटेनिकल स्टडी ऑफ द गोंड ट्राइब ऑफ छत्तरपुर एण्ड गढ़चिरौली डिस्टिक्ट्स ऑफ मध्यप्रदेश स्टेट, इण्डिया', फ़िटोटेरापिया

લોકસરવાણી

(हनी बी का गुजराती संस्करण)
रमेश पटेल, सम्पादक
द्वारा सृष्टि, पो. बॉ. नं. १५०५०
अम्बावाड़ी, अहमदाबाद- ३८००१५
ई.मेल- loksarvani@sristi.org

जब खट्टा मीठा लगे

खटाई से लाखा दूर भगाना

खेड़ा जिले के बानीधान मावलजीभाई गढ़वी ने जैविक खेती किस तरह अपनायी, इसकी बड़ी रोचक कहानी है। दो साल पहले उनके कपास के खेत में कीड़े लग गए थे, अपना खेत घूमने के बाद वे थक गए थे और वे छाछ पीते हुए सुस्ता रहे थे। अचानक उन्हें जाने क्या सूझा कि उन्होंने छाछ की कुछ बूंदे वहां पड़े लाखा पर डाल दी। तुरन्त ही लाखा बेहोश हो गया। इससे मावलजीभाई को लगा कि खट्टे स्वाद का लाखा पर बहुत बुरा असर पड़ता है। उन्होंने १५० ग्राम इमली तथा १५० ग्राम नीबूं का रस लेकर उसे २०० मिली नफ़ातियो (*Ipomoea fistulosa*) नामक पौधे के सत् के साथ मिलाया। इसमें २५० ग्राम तम्बाकू डाला तथा इस मिश्रण की २५० मिली मात्रा को पंद्रह लीटर पानी में मिलाकर कीटनाशक तैयार किया गया। इस कीटनाशक के छिड़काव से लाखा से तो मुक्ति मिली ही, पौधे की वृद्धि भी खूब अच्छी हुई।

वे पिछले कई वर्षों से इस विधि को अपनाए हुए हैं तथा उन्हें काफ़ी अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। मावलजीभाई के खेत में १२०० किलो/एकड़ कपास का उत्पादन होता है जो उन किसानों के उत्पादन से ज्यादा है जो रासायनिक खाद का प्रयोग कर रहे है।

छाछ, आलू का आटा तथा पानी से पतला घोल बनाकर इसे पौधे पर छिड़कने से दीमक नहीं लगती। www.ghorganics.com page9.html#Aphids)

नवसृजक- बानीधान मावलीजीभाई गढ़वी, गांव- अगत ना मुवाड़ा, जिला- खेड़ा, गुजरात, निरीक्षक- राजेश भाई पटेल

वानस्पतिक खाद

जूनागढ़ जिले के धीरुभाई वालजीभाई गढ़ेसरिया ने आम के पत्तों से एक वानस्पतिक खाद बनायी है। यद्यपि इस

पद्धति से खाद बनाना कोई नया नहीं है, परन्तु मावलजीभाई ने इसमें तम्बाकू और अरण्डी की खली भी डाली है।

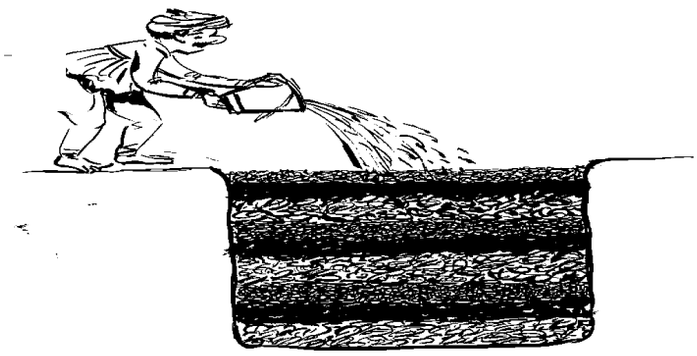

पच्चीस फ़ीट चौड़ा और चार फीट गहरा गड्ढा खोदते हैं। गड्ढे में सबसे नीचे आम की पत्तियां डालते हैं।

उसके ऊपर गाय का गोबर तथा अरण्डी की खली डाली जाती है। इसके ऊपर तम्बाकू का छिड़काव किया जाता है। इस पर चार-पांच इंच मिट्टी भर देते हैं। इस पर पानी छिड़क देते हैं। यही प्रक्रिया गड्ढा भरने तक दोहराते हैं। नवम्बर में गड्ढा भरा जाता है तथा जून तक खाद तैयार हो जाती है। मानसून के बाद इस खाद को प्रयोग में ला सकते हैं।

खाद बनाने की प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्न वेबसाइट देखें- www.tnau.ac.in/scms/EnScience/Research.htm, www.oznet.ksu.edu/library/hort2/MF1053.pdf

नवसृजक- धीरुभाई वालजीभाई गधेसरिया, गांव- धावा, जिला-जूनागढ़
निरीक्षक- दिलीप कोराडिया

मूंग में पुष्पन को बढ़ाना

मूंग में पुष्प बढ़ाने तथा एफ़िड पर नियन्त्रण पाने के लिए सौराष्ट्र के मनसुख भाई गोविन्दभाई कापड़िया तम्बाकू, ग्वारपाठा तथा गौमूत्र घोल का छिड़काव करते हैं। २०० ग्राम तम्बाकू, ग्वारपाठा की दो पत्तियां दो लीटर खट्टी छाछ तथा ५०० मिली गौमूत्र को १५ लीटर पानी में मिलाते हैं। लगभग पंद्रह दिनों तक इसे छोड़ देते हैं। पंद्रह दिन बाद छान कर इसकी १५० मिली मात्रा पंद्रह लीटर पानी में मिलाकर खेत में छिड़कते हैं। इस छिड़काव को आठ-दस दिन के अन्तराल से दो - तीन बार दोहराते है। मनसुख भाई का कहना है कि इस विधि से न केवल फूल अधिक लगते हैं बल्कि पानी की कमी में भी पौधा जीवित रह सकता है।

AZ 41 नाम की जैविक खाद ग्वारपाठा के पाउडर (मेनेपॉल) तथा मेलेलेऊका नामक आस्ट्रेलियाई चाय की छाल के तेल से बनती है। AZ 41 के प्रयोग से एफ़िड, मक्खियों तथा अन्य महामारियों से पौधे की रक्षा होती है। फूलों पर चकत्ते नहीं पड़ते। (www.manilatimes.net/national/2003/nov/12/prov 20031112 pro5.html)

गौमूत्र के छिड़काव से भी एफ़िड पर रोक लगायी जा सकती है। www. hdra. org. uk/cgi-bin/countlink. cgi?

नवसृजक- मनसुखभाई गोविन्दभाई कपाड़िया
गांव- नवी परबाड़ी, जिला- राजकोट
निरीक्षक- दिलीप कोराड़िया

हित्तलगिड़ा
(हनी बी का कन्नड़ संस्करण)
टी.एन.प्रकाश,
सम्पादक, हित्तलगिड़ा
डिपार्टमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स
यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस, GKVK
बैंगलोर- ५६००६५, कर्नाटक
ई.मेल- hittalu@bgl.vsnl.net.in.

जोड़ों के दर्द की दवा

निरगुंडी (*Vitex negundo*) की पत्तियों से पशुओं के जोड़ों के दर्द में राहत मिलती है। निरगुंडी की पत्तियों को चूने तथा काली मिर्च के साथ पीसा जाता है, इस पेस्ट को दर्द वाले भाग पर लगाने से दर्द में बहुत राहत मिलती है। पेस्ट लगाने के बाद गीले कपड़े से चोट ग्रस्त भाग को बांधा जाता है।

(आयुर्वेद में भी इस बात का जिक्र है कि निरगुंडी के प्रयोग से जोड़ों तथा हड्डी के दर्द में राहत मिलती है। (http://www. ayurhelp . com / Bone _ and _ joint _ % 20 pain.html. शरीर के विभिन्न अंगो के दर्द में भी इससे राहत मिलती है। गिराक आर.डी, अमिनुदीन (१९९४), ट्रेडिशनल प्लान्ट रेमेडिज अमंग द कोन्ध ऑफ डिस्ट्रिक्ट धेंकानल, उड़ीसा)

चावल की फ़सल की फफूंद रोग से रक्षा

चावल की फ़सल में पत्तियों पर फफूंद रोग बहुत अधिक होता है। कर्नाटक राज्य के उत्तरी कन्नड़ जिले की सिद्धि जनजाति के अनुसार जिन खेतों में रासायनिक खाद का प्रयोग किया जाता है वहां यह रोग अपनी भयावहता दिखाता है। सिद्धि जाति के लोग कॉलू (*Careya arborea*) पेड़ की छाल से इस रोग पर काबू पाते हैं।

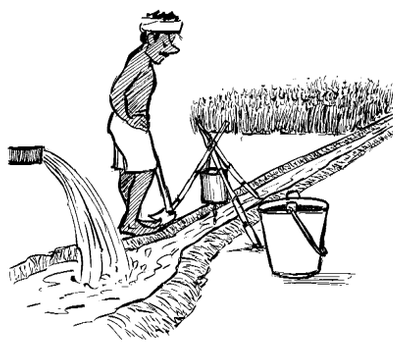

एक एकड़ चावल के खेत के लिए कॉलू की दो किलो छाल को पीसकर पानी के साथ खेत में सींच देते हैं। लहसुन की छाल भी इसके लिए बहुत असरकारी है। www. hdais. gov. tw/Introduction /Plant % 20 Protection.htm.

गाय को सांप काटे तो क्या करें?

लोबेलिया निकोटिनिफॉलिया (*Lobelia nicotinifolia*) की पत्तियों से सांप तथा अन्य जहरीले जन्तुओं के काटने का इलाज किया जाता है। पत्तियों को

धोकर-पीसकर उनका सत् निकाला जाता है तथा उसे जानवर के नाक में डाला जाता है। इससे जहर का असर बहुत कम हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर जानवर को अंग्रेजी दवा भी दी जाती है।

(खाँसी नली की सूजन, अस्थमा, जहरीले जानवर के काटने, उल्टी इत्यादि के लिए लोबेलिया निकोटिनिफॉलिया की पत्तियां का प्रयोग भारत में बहुत लोकप्रिय है। चीनी औषध विज्ञान में भी लोबेलिया रेडिकेन्स थुम्ब के प्रयोग से घाव, दांत दर्द, फ़ोड़ों आदि के इलाज का ज़िक्र है।

(www.hort.purdue.edu/ newcrop/med-aro/factsheets/ LOBELIA.html)

(ऊपर वर्णित सभी पद्धतियां १२ वीं शोधयात्रा के दौरान इकट्ठी की गई थी। यह शोधयात्रा दिसम्बर २००३ में कर्नाटक में हुई थी। चिकमंगलूर जिले के कुड्डिनैली क्षेत्र के किसानों में यह सभी पद्धतियां काफ़ी लोकप्रिय हैं। ज्ञान शोधको के नाम न दे पाने का हमें दुःख है।)

जिन लोगों से हमें ज्ञान प्राप्त हुआ है उन्हे धन्यवाद मिलना आवश्यक है वस्तुतः हनी बी नेटवर्क का मूल उद्देश्य भी तो यही है।

परंपरागत विषनाशक

कारवाँ बनता गया

हनी बी नेटवर्क के साथ जुड़ने की आपकी इच्छा ही इसकी सफ़लता है। आप सब हमारे साथ सहयोग के इच्छुक हैं।

श्री निवास मिरियाला (srinivasmiriyala @ hotmail. com) अमेरीकी भारतीय संस्थाओं के साथ मिलकर नवसृजन, निवेश और उद्यम आधारित मॉडल तैयार करना चाहते हैं।

स्टूडेण्ट कनसेप्ट्स (info @ studentsconcept.org) पिलाई के विद्यार्थियों का उभरता प्रयास है। यह ग्रुप हमारी गतिविधियों में शामिल होना चाहता है।

अभिजीत मूले (aamulye @ yahoo. com) पत्रकार हैं। इन्होंने हनी बी का मराठी संस्करण शुरु करने की इच्छा जतायी है।

राजन श्री निवासन (vyacademy @ yahoo.com), ने अपने किसी मित्र से कर्नाटक में हो रही बारहवीं शोधयात्रा के बारे में सुना था। वे इससे प्रभावित हुए और शोधयात्रा के दौरान सम्मानित हुए एक नवसृजक से जाकर मिले। श्री निवासन हनी बी नेटवर्क के साथ जुड़ना चाहते हैं।

अधिपाराशक्ति कृषि विज्ञान कॉलेज, तमिलनाडु के विद्यार्थी (२००३ बैच) एक संस्था बनाना चाहते हैं जो किसानों के हित के कार्य करेगी। (agribeats @ rediffmail.com)

जो भी पाठक मित्र हमारे नेटवर्क से जुड़ना चाहें वे इस पते पर सम्पर्क करें- honeybee@sristi.org

पुस्तक समीक्षा

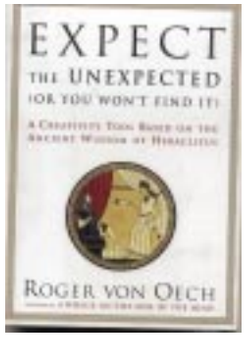

एक्सपेक्ट द अनएक्सपेक्टेड (और यू वूडन्ट फ़ाइन्ड इट): हरक्यूलिस की बुद्धिमत्ता की कथा

रोगर वॉन ओएक
द फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क २००१
मूल्य- $ 18.50

कन्यूशियस और गौतम बुद्ध के काल में जन्मे हरक्यूलिस का विश्वास था कि वास्तविकता एक पहेली है। लेखक कहते हैं कि डिज़ाइन टू व्हेक अर्थात लोगों की परम्परागत सोच को बदलकर उन्हें नवीन नज़रिया देने का यह उसका अपना तरीका था। इस पुस्तक में हरक्यूलिस की इसी विशेषता पर मुख्यतः बात की गई है।

लेखक का कहना है कि हरक्यूलिस की पद्धति से लाभ उठाने के लिए हमें अपनी सोच पद्धति बदलनी होगी। अमेरीकी मनोचिकित्सक पॉल व्हेजलव्हिक का उदाहरण देते हुए लेखक कहते है कि १९५० के आखिरी महीनों में पॉल ने देखा कि सीटल (USA) के लोगों की गाड़ियो के शीशों पर अजीब तरह के पॉकमार्क (छोटी फुंसी जैसा निशान) उभरने लगे हैं। इस विषय पर बहुत सी बातें हुई, कहा गया कि यह पॉकमार्क प्रदूषित हवा के कारण है जो रुस की परमाणवीय जांचों का परिणाम है। वहां की सरकार ने जांच का आदेश दिया।

जांच के परिणाम स्वरुप पाया गया कि समय के साथ गाडी के कांच पर इस तरह के निशान स्वतः ही उभर आते हैं। इन छोटे-छोटे निशानों से लोगों में आतंक फैल गया और लोग अपनी गाड़ियों के कांच की जांच परख करने लगे। बाहर से देखने पर ये निशान बहुत स्पष्ट थे, जबकि अन्दर से ये निशान नज़र ही नहीं आते थे। लोगों को महसूस हुआ कि ये निशान हमेशा से ही गाड़ियों पर थे परन्तु लोगों ने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया।

इसी तरह का एक अन्य उदाहरण (कुल ३० उदाहरण है पूरी पुस्तक में) थॉमस एडीसन के जीवन से लिया गया है। लोगों को नौकरी पर रखने से पहले एडीसन आवेदकों को भोजन के लिए आमंत्रित करता। सूप पीते समय यदि वह व्यक्ति बिना चखे ही अतिरिक्त नमक डाले तो एडीसन उसे नौकरी पर नहीं रखता। एडीसन का मानना था कि ऐसा व्यक्ति अनुभवहीन होगा, जिसने नमक के स्वाद का अनुभव किये बिना ही और नमक मिलाया हो।

हरक्यूलिस ने इन उदाहरणों के द्वारा लोगों को यह समझाने की कोशिश की है कि जाने-अनजाने किये गए क्रिया-कलापों का भी महत्व होता है जिन्हें आमतौर पर अनदेखा किया जाता है। नौकायान के एक कोच का उदाहरण देते हुए कहा कि कोच ने अपनी टीम को ध्यान योग का प्रशिक्षण देने हेतु प्रशिक्षक बुलवाया। जैसे-जैसे टीम योग का प्रशिक्षण लेती गई टीम में कुशलता आती गई। परन्तु उनकी गति भी धीमी हो गई क्योंकि अब जीत-हार की बजाय आपसी मैत्री पर अधिक ध्यान था।

इस तरह के हास्यपूर्ण उदाहरणों द्वारा लेखक हमें प्रेरणा देना चाहता है कि हमें जीवन की छोटी मोटी समस्याओं के सोचपूर्ण समाधान खोजने चाहिए। इसके लिए हमें अपने अन्दर झांकने की तथा गहरी सोच की आवश्यकता होगी। लेखक का कहना है कि उन्होंने इस विधि से अच्छे परिणाम पाये हैं। वे कहते हैं कि जब आकाश में सूरज नहीं होता तब तारे होते हैं, इस सोच से आपका अहम् नष्ट होगा तथा रिश्ते सुधरेंगे। इसी सोच के कारण उनका खोया दोस्त उन्हें फ़िर से मिला। इस व्यक्ति के साथ लेखक की दोस्ती टूट चुकी थी। ऐसी सोच के बाद आप अपने दोस्त के व्यक्तित्व की ऐसी खूबियां भी देख सकेंगे जिन पर पहले आपका ध्यान गया ही नहीं।

ऐसा लगता है जैसे इस पुस्तक का उद्देश्य ही है कि पाठकों को जीवन के अनछुए पहलुओं का ज्ञान कराना। यह अवश्य है कि हर व्यक्ति का अलग स्वभाव- अलग सोच होती है वैसे ही इस पुस्तक के परिणाम भी अलग-अलग होंगे।

(रोनिता चट्टोपाध्याय की समीक्षा के आधार पर लिखित)

पृष्ठ १२ का शेष भाग

चिन्तन-मनन की आन्तरिक यात्रा शुरु होती है। क्या मछुआरों की तकलीफ ने उनको कटु बना दिया है अथवा मछुआरों के संघर्ष की कहानियों से हमने क्या सीखा? जामनगर में निलेश भाई दवे के प्रयासों से मिली सफ़लता से देश के किसान प्रेरणा लेंगे? क्या जैविक खेती का जो रुप जामनगर मे दिखा वह कहीं और दिखेगा? जब हमने अपने साथी शोधयात्री वल्लभभाई भूटानी को सम्मानित किया तब हम सोच रहे थे कि इनके प्रयोगों के पीछे कितना गज़ब का जोश और उत्साह था। हरीश भाई की कहानी तो और भी चौंका देने वाली है। हरीश भाई क्षेत्र के सबसे बड़े रासायनिक खाद विक्रेता हैं जबकि उनका अपना एक बड़ा खेत है जहां वे अनिवार्यतः जैविक खेती ही करते हैं।

बड़े गांव की सरपंच अमीनाबहन ने हमें ६० वर्षीय दृष्टिहीन/मछुआरे अब्बास भाई हारुन भाई मानिक भाई से मिलवाया। अब्बास भाई बहुत अच्छे लोक कथा वाचक भी है। वे कहानियों को राग में सुनाते है। प्रसिद्ध नौका चालक कासमभाई की कहानी सुनकर तो लोगों की आंखे भर आयी। जामनगर में जब जनरेटर से चलने वाला स्टीमर आया तब मछुआरे इसके रखरखाव को लेकर तथा इसके द्वारा गहरे पानी की मछलियां पकड़ने के लिए खासे उत्सुक थे। स्टीमर का मालिक बड़ा दुःसाहसी था। उसे अपने पैसे पर घमण्ड भी था। एक बार दूर क्षितिज से तूफ़ान उठ रहा था, स्टीमर के मालिक ने कासिम भाई से स्टीमर चलाने को कहा। कासिम भाई ने कहा कि मौसम के मिजाज देखते हुए समुद्र में जाना ठीक नहीं है। परन्तु वह नहीं माना, स्टीमर समुद्री यात्रा पर गया, पर कभी वापिस नहीं आया, वहीं जल-समाधि ली। यह कहानी गवाह है इन मछुआरों के ज्ञान की, जो मौसम का मिजाज भी समझते है परन्तु इनके मिजाज की परवाह किसे है?

सर्वश्रेष्ठ इनक्युबेटर एवॉर्ड में ज्ञान बना भागीदार

गुजरात ग्रासरुट इन्नोवेशन ऑगमेन्टेशन नेटवर्क (GIAN) हनी बी नेटवर्क की ही साथी संस्था है। नवसृजनों को व्यवसायिक रुप में बाज़ार में उतारने में ज्ञान नवसृजकों की मदद करती है। नेटवर्क की सहयोगी संस्थाओं जैसे :- IIM अहमदाबाद, IITs तथा राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान (NID) अहमदाबाद से नवसृजन के लिए विशेष सलाह भी लेता है। NID की मदद से ज्ञान ने GRID नाम से एक डिज़ाइन स्टूडियों भी स्थापित किया है। स्थानीय नवसृजन के स्वरुप अर्थात् डिज़ाइन में सुधार का कार्य GRID द्वारा किया जाता है।

ज्ञान अब तक बारह नवसृजनों को व्यवसायिक उत्पाद के रुप में बाज़ार में उतार चुका है। ५० नवसृजनों के सुधार-संवर्धन हेतु मदद दे चुका है। नवसृजकों के लिए ज्ञान पेटेन्ट हेतु आवेदन भी करता है। अब तक ज्ञान कुल २४ पेटेन्ट फ़ाइल कर चुका है जिनमें ६ पेटेन्ट अमेरीका में फ़ाइल हुए है।

डॉ. कस्तूरीरंगन ने ज्ञान (उत्तरपूर्व) का दौरा किया

इसरो के पूर्व निर्देशक डॉ. कस्तूरीरंगन ने ज्ञान- उत्तरपूर्व की गतिविधियों का लेखा-जोखा लिया। कुछ नवसृजनों को देखकर श्री रंगन बहुत प्रभावित हुए। श्री मार्कण्ड काले का बुलेटप्रूफ़ पदार्थ, पवित्र कूकन की थर्सटिंग मशीन, श्री विपुल बेजबरुआ का बांस का पंखा इत्यादि प्रमुख है। श्री रंगन ने पवित्र कूकन से बातचीत की और सलाह दी कि उनके नवसृजन में अभी और सुधार की गुंजाइश है। उन्होंने ज्ञान उत्तर-पूर्व के कार्यों की सराहना की और वादा किया कि वे इसरो के वैज्ञानिकों को नवसृजकों के साथ बातचीत करने के लिए शीघ्र ही भेजेंगे।

ज्ञान उत्तरपूर्व में डॉ. कसूरीरंगन

ज्ञान (पश्चिम) तथा डॉ. अशोक झुनझुनवाला (टेलिकम्यूनिकेशन एण्ड कम्प्यूटर नेटवर्क ग्रुप- Te-net, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, चैन्नई) को साझा रुप से वर्ष २००३ का टेक्नोलॉजी बिजनिस इनक्यूबेशन एवार्ड दिया गया।

भारत सरकार के विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड तकनीकी उद्यम के विकास के क्षेत्र में किये गये उत्कृष्ट कार्यों हेतु देता है। भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने विजेताओं को एक लाख रुपये की नगद राशि तथा स्मृति चिन्ह भेंट किया।

महामहिम राष्ट्रपति से पुरस्कार ग्रहण करते महेश पटेल (दांये) तथा चिंतन बक्शी

३० जून, २००४ को आयोजित किये गए पुरस्कार समारोह में ज्ञान की तरफ से महेश पटेल (मुख्य प्रबन्धक, नवसृजन) तथा चिन्तन शिबान बक्शी (मुख्य नवसृजन अधिकारी)ने पुरस्कार ग्रहण किया।

डॉ. मशेलकर ने ज्ञान (उत्तर) का दौरा किया

डॉ. मशेलकर (महानिर्देशक CSIR तथा सचिव, DSIR, भारत सरकार) ने १५ जुलाई २००३ को ज्ञान उत्तर का दौरा किया। राजस्थान के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री माधव सिंह दीवान भी डॉ. मशेलकर के साथ थे। विभिन्न गैर सरकारी संस्थाओं के प्रमुख भी उपस्थित थे। डॉ. मशेलकर राजस्थान तथा आसपास के राज्यों के नवसृजकों से भी मिले तथा उनके नवसृजन भी देखे। तकनीकी नवसृजनों के सुधार पेटेन्ट तथा व्यापारी

ज्ञान (उत्तर) के दफ्तर में डॉ. मशेलकर

करण के मुद्दों पर भी चर्चा की गई। श्री मशेलकर ने ज्ञान उत्तर के कार्यों की प्रशंसा की।

कचरे की ढेरी का सौन्दर्य

निरुद्देश्य विचारों का अर्थ

क्या आप कचरे के ढ़ेर में छिपे सौन्दर्य को देख सकते हैं? यदि आपको यहां कोई खूबसूरती या अर्थ नज़र आये, तो आप हर उस चीज़ में अर्थ पा सकते हैं जिसका कोई अर्थ नहीं होता। यह कहानी एक भारतीय वैद्य पर आधारित है जो अपनी जनजाति के लिए नक्शे बनाता था जिनके आधार पर ये लोग शिकार करते थे। यह वैद्य चमड़े के ताजा टुकड़े को धूप में सुखाकर तह बनाता, अच्छी तरह दबाकर तह खोल देता। अब इस पर कई तरह की लाइनें बन जाती। यहां यह कुछ निशान लगाता और इस तरह कुछ न कुछ ऐसा निकल आएगा जो आपके लिए उपयोगी होगा।

सांसारिक वस्तुओं का सौन्दर्य

किसी भी कला-शिल्प में सौन्दर्य होता है यह सभी जानते हैं। परन्तु हरक्युलिस पाठकों को चुनौती देते हैं कि उन वस्तुओं में सौन्दर्य देखो जो बदसूरत है, पर जो दैनिक जीवन में नज़र आती है। मसलन पाइप पर लगे जंग के रंग और आकार में, रसोई के सिंक के पाइप में या आपके शर्ट पर लगे पसीने के धब्बों में.....

पुस्तक का अंश-पेज १०४

संवाद

हार्दिक धन्यवाद!

श्री मोहन नेगी (मेन ब्रांच, मुख्य डाकघर, पौड़ी, उत्तरांचल) के हम हार्दिक आभारी है। जब श्री नेगी ने देखा कि 'सूझबूझ आस-पास की' की बहुत सी प्रतियों पर पूरा पता नहीं लिखा है, उन्होंने हमे पूरा पता लिख भेजा।

(श्री नेगी का पत्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं- सम्पादक)

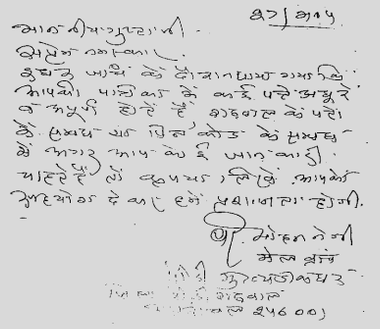

देशज ज्ञान को मजबूत बनाने हेतु

एलेशिया जेंगारी
alessia.zangari@fao.org
जेन्डर एण्ड डेवलपमेन्ट सर्विस, डी. डबल्यू डबल्यू
फूड एण्ड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन
रोम, इटली

मैं UNFAO लिंक प्रोजेक्ट के साथ-साथ एक वॉलन्टीयर के रुप में कार्यरत हूं। दक्षिण अफ्रीका (तन्जानिया, मोजाम्बिक और स्वाजिलैण्ड) मेरा कार्य क्षेत्र है। मैं यहां के लोगों के स्थानीय ज्ञान और रिश्तों पर तथा जैव विविधता के संरक्षण, संवर्धन और प्रबन्धन का कार्य कर रही हूं।

हम तंजानिया के लोगों के स्थानीय ज्ञान का नेटवर्क बनाने की कोशिश कर रहें हैं, ताकि देशज ज्ञान के अनुसंधान, संरक्षण तथा विश्लेषण को बढ़ावा दिया जा सके। हम इस विषय पर आपका सहयोग चाहते हैं।

(हमें आपकी मदद करके बेहद खुशी होगी। हमारी वेबसाइट (www.sristi.org) पर उपलब्ध सामग्री से आपको बेहद मदद मिलेगी। इसके अलावा भी आपको किसी तरह की सहायता चाहिए तो हम अवश्य मदद करेंगे।)

लोक कलाकारों की बौद्धिक सम्पत्ति अधिकारों का संरक्षण

किशोर भट्टाचार्या
bhattkishore@yahoo.co.uk
विभागाध्यक्ष, लोककला अनुसंधान विभाग
गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम

असम के लोक- कलाकारों, शिल्पकारों तथा परम्परागत ज्ञान धारको के ज्ञान के संरक्षण के लिए हमने गुवाहाटी विश्वविद्यालय के लोक कला विभाग में कुछ कार्य शुरु किये हैं। लोक आधारित डिज़ाइनों की नकल चोरी इत्यादि रोकने के लिए भी हम प्रयासरत है।

शिल्पकारों के अधिकारों का संरक्षण हमारा मुख्य उद्देश्य हैं। हमारी सांस्कृतिक महत्व की वस्तुओं का बाज़ार में दुरुपयोग न हो, शिल्पकारों को उनके हुनर का उचित मूल्य मिले, इन मुद्दों पर हम कार्य करना चाहते है। हमारा कार्य अपनी शैशव अवस्था में हैं। हमें आपका सहयोग चाहिए। हम आपके संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भी खरीदना चाहते हैं।

(IPR संरक्षण में आपकी रुचि है, जानकर मन प्रसन्न हुआ। अब स्थानीय ज्ञान को कोई खतरा नहीं है। आपको जो भी नई जानकारी मिले उसे NIF की राष्ट्रीय पंजी में अवश्य दर्ज करायें।)

जोश की क्या उम्र होती है ?

सयाली पी. घोड़पकर
२०४ वेंकटेश अपार्टमेन्ट, पूना

मुझे आपकी पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। मेरी वार्षिक सदस्यता राशि स्वीकार करें। मै पूना के अक्षरानन्दन स्कूल में ७वीं कक्षा में पढ़ती हूं।

(सायाली हमें आपका पत्र पढ़कर बेहद खुशी हुई। आप अपने विचारों तथा सुझावों से अवश्य अवगत करायें।)

जैविक खाद्य के व्यापार की संभावनाएं

विक्रम शाह
vikram_cshah@yahoo.com

हम उच्च श्रेणी के मेडिकल उपकरणों का व्यापार करते हैं। परन्तु हम इसके साथ-साथ कोई अन्य व्यापार भी करना चाहते हैं। जैविक खाद्य के व्यापार के बारे में हम गम्भीरता से विचार कर रहे हैं। गूगल सर्च में आपका पता मिला। हम भी अहमदाबाद से हैं, आपका सहयोग चाहिए।

(आप परख नामक संस्था से सम्पर्क कर सकते हैं, यह जैविक खाद्य के व्यापार से जुड़ी संस्था है। आप अचल पटेल से सम्पर्क करें, इनका नम्बर है- 9898262821)

शोधयात्रा में शामिल होना चाहते हैं

एस. नन्दकुमार
कोन्डेगोन्डेऊपलयम, पोल्लाची, कोयम्बदूर
तमिलनाडु

पिछले अंक में पूछी गई चित्र पहेली पशुओं को पानी पिलाने का कुण्ड है। इससे पानी व्यर्थ नहीं जाता।

आगामी शोधयात्रा के बारे में बतायें। हम भी इसमें शामिल होना चाहते हैं।

(पत्र के लिए धन्यवाद। यद्यपि चित्र पहेली का आपका जवाब सही नहीं है, परन्तु हम आपके प्रयास की सराहना करेंगे। सही जवाब पृष्ठ- २१ पर है। अगली शोधयात्रा १८ जनवरी से २४ जनवरी २००५ के बीच तमिलनाडु में आयोजित की जाएगी। उम्मीद है आप आयेंगे।)

जैविक खाद्य क्या है?

श्रीपाल शाह
way4u@rediffmail.com

मैंने जैविक खाद्य के बारे में बहुत सुना है। परन्तु अभी भी समझ नहीं आया है कि जैविक खाद्य क्या है तथा जैविक खेती क्या है? इन शब्दों को लेकर भ्रमित हूं।

(जैविक खाद्य वह है जिसे उगाने के दौरान किसी तरह की रासायनिक खाद अथवा

कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता हो। प्राकृतिक संसाधनों के सीमित उपयोग के द्वारा जैविक खाद्य उगाया जाता है। जैविक खेती अपनाते समय किसानों के इन सभी मानदण्डों को मानना संभव नहीं होता। हमारे पास अभी तक निरीक्षण का कोई ऐसा तरीका भी नहीं है जो पूर्णतया व्यवहारिक हो।)

पत्रिका नहीं मिल रही!

सुमा पुन्नाम्मा
न.- १४- केशवराज ले. आउट, बैंगलोर

मैं आपकी पत्रिका की बहुत पुरानी पाठक हूं। परन्तु पिछले कुछ वर्षों से मुझे यह नहीं मिल रही थी। अचानक इसका दिसम्बर-मार्च २००३-२००४ अंक मुझे मिला। लम्बे अन्तराल के बाद इसे फ़िर से पढ़ना अच्छा लगा। बहुत-बहुत धन्यवाद तथा इतने उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई।

मेघालय में महामारी की रोकथाम के लिए मरे हुए केकड़ों का प्रयोग किया जाता है। कृषि वैज्ञानिक के.डी. खार्कोगेर महामारी नियन्त्रण की परम्परागत पद्धति के आधार पर इस विधि का प्रयोग करते हैं। चावल के खेतों में मरे हुए केकड़े छोड़ दिये जाते हैं इनकी बदबू से कीड़े इन पर आकर्षित होते हैं फिर कीड़ो को पकड़कर मार दिया जाता है।

(पत्र के लिए हार्दिक धन्यवाद। हम आप द्वारा भेजी गई जानकारी को NIF द्वारा आयोजित नवसृजनों के निरीक्षण की चौथी प्रतियोगिता हेतु भेज रहे हैं।)

कृषि पत्रकारिता

भूषण फड़नीस
bpphadnis@indiatimes.com

मैंने कृषि उद्यान विषय में MPKV, रुड़की से स्नातकोत्तर डिग्री ली है। वर्ष २००० में मैं E-TV के मराठी चैनल मे अन्नदाता नामक कार्यक्रम के प्रोग्राम सहायक के रुप में कार्यरत हूं। यह कार्यक्रम किसानों के लिए है तथा प्रतिदिन प्रसारित होता है। महाराष्ट्र ओपन विश्वविद्यालय में भी कृषि वीडियो प्रसारण हेतु सहायक के पद पर कार्य किया है।

आपके सूचना पत्र से मैंने बहुत कुछ सीखा। मैं कृषि पत्रकारिता को लेकर कोई कार्यक्रम शुरु करने का विचार कर रहा हूं। दुर्भाग्य की बात है कि कृषि सम्बन्धी नवीन जानकारियों की तरफ कोई अधिक ध्यान नहीं देता।

(आपके पत्र का विस्तृत जवाब हम अलग से भेज रहे हैं। आपके पास जो भी नई पद्धतियां या स्थानीय जानकारी है, क्या उसे हनी बी के साथ बांटना चाहेंगे?)

सदस्यता के इच्छुक

डॉ.डी. धनपाल
gerece_d@yahoo.co.in
पर्यावरण ऊर्जा - CSIR, निर्देशक
जियो रिसोर्स सेन्टर, नमक्कल
तमिलनाडु

मैने हनी बी नेटवर्क के बारे में काफ़ी कुछ सुना है। आपके सूचना पत्र का तमिल संस्करण नमवालि वेलनमायी भी मैंने देखा है। हमारी संस्था अब आदिवासी क्षेत्रों मे जैवविविधता संरक्षण का कार्य कर रही है। हमारी संस्था अभी अपनी शैशवअवस्था मैं है, हमें आपका सहयोग चाहिए। क्या आप हमें हनी बी भेज सकते हैं?

(हनी बी नेटवर्क में आपका स्वागत है। हम भी आपके अनुभव का लाभ उठाना चाहते हैं, कृपया हनी बी के लिए लेख भेजे। हम हनी बी सदस्यता हेतु विस्तृत जानकारी आपको भेज रहे हैं।)

विचार

डॉ. राजेश आचार्य
info@markpatent.com
प्रोपराइटर, एच. के. आचार्य एण्ड कम्पनी
उपाध्यक्ष, इन्टेलैक्चुअल प्रॉपर्टी प्रैक्टिशनर्स एसोसिएशन, अहमदाबाद

पिछले अंक में पाटन पटोला पर जो जानकारी दी गई वह बेहद ज्ञानवर्धक थी। आपने न केवल तकनीकी जानकारी दी, बल्कि GI के संदर्भ में आने वाली समस्याओं से भी अवगत करवाया। पाटन पटोला को GI संरक्षण अवश्य मिलना चाहिए। आपका आलेख इस दिशा में कुछ कर पाएगा ऐसा मेरा विश्वास है।)

(बहुत-बहुत शुक्रिया। इस क्षेत्र से जुड़े अन्य लोगो के विचार भी हम जानना चाहेंगे।)

आवरण कथा जो सोचो सो पाओ का जवाब

दैत्यों के राजा ने अपने जादू का प्रयोग किया था। हुगी कोई लड़का नहीं बल्कि उत्तर्थ लोकी की जीतने की सोच थी। इस कहानी से समझाने की कोशिश की गई है कि सोच में बहुत शक्ति होती है। सोच की ताकत से देवताओं को भी हराया जा सकता है।

पहेली का सही जवाब

पिछले अंक में पूछी गई पहेली ने पाठकों को लगभग निरुत्तर ही छोड़ दिया। कुछ ने कहा यह चरवाहों के आराम का स्थान है, कुछ ने कहा मवेशियों के पानी पीने के लिए कुण्ड है कुछ ने कहा बरसाती पानी एकत्र करने का कुण्ड है आदि-आदि। दोस्तों, यह भूटान के स्कूली बच्चों का पेशाब घर है।

केकड़ों को पकड़ने की विधि

चावल (थोडूं) के भूसे को तब तक सेका जाता है जब तक की बिस्किट की सुगंध न आने लगे। इन्हें पके हुए ठण्डे चावल में मिलाकर नींबू जैसे गोले बनाकर मिट्टी के घड़े में डालकर एक रात के लिए छोड़ देते हैं। घड़ा बड़ा और छोटे मुंह का होना चाहिए ताकि इसकी खुशबू से आकर्षित होकर केकड़े इसके अन्दर तो घुस जाएं पर बाहर नहीं आ पाएं। यह भेजा है- बीबी पुन्नम्मा, स्टोन हिल एस्टेट, अरिकाड़- गांव, जिला- कोड़ागु, कर्नाटक, इस पद्धति को हम तक पहुंचाया सुमा पुन्नम्मा ने।